https://www.facebook.com/Kamal.Sandesh/ www.kamalsandesh.org @kamalsandeshbjp

कमल संदेश

'जहां-जहां कांग्रेस की सरकारें रहीं, वहां-वहां नक्सलवाद पनपा'

वर्ष-14, अंक-06 16-31 मार्च, 2019 (पाक्षिक) ₹20

सौगंध मुझे इस मिट्टी की,
मैं देश नहीं मिटने दूंगा,
मैं देश नहीं रुकने दूंगा,
मैं देश नहीं झुकने दूंगा।

भारत द्वारा पाकिस्तान में आतंकी कैम्पों पर प्रहार

भारत के विपक्ष के पास सीखने के लिए बहुत कुछ है | अब चुप होकर नहीं बैठेगा नया भारत | सेना को जल्द मिलेगी घातक असॉल्ट राइफल AK-203

सागर (मध्य प्रदेश) में एक विशाल बूथ कार्यकर्ता सम्मेलन के दौरान भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह का स्वागत करते मध्य प्रदेश भाजपा नेतागण

रायपुर (छत्तीसगढ़) में आयोजित एक विशाल जन सभा में जनाभिवादन स्वीकार करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह

उमरिया (मध्य प्रदेश) में विजय संकल्प बाइक रैली का शुभारंभ करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह और साथ में भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शिवराज सिंह चौहान

नई दिल्ली में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे तथा द्वारका एक्सप्रेसवे की आधारशिला रखते केंद्रीय वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली, विदेश मंत्री श्री सुषमा स्वराज, केंद्रीय परिवहन व राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी तथा अन्य

कमल संदेश
पाक्षिक पत्रिका

संपादक
प्रभात झा
कार्यकारी संपादक
डॉ. शिव शक्ति बक्सी
सहायक संपादक
संजीव कुमार सिन्हा
संपादक मंडल सदस्य
सत्यपाल
राम नयन सिंह
कला संपादक
विकास सैनी
मुकेश कुमार

संपर्क
फोन: +91(11) 23381428
फैक्स
फैक्स: +91(11) 23387887
ई-मेल
mail.kamalsandesh@gmail.com
mail@kamalsandesh.com
वेबसाइट: www.kamalsandesh.org

विषय-सूची

06 **पाकिस्तान स्थित आंतकी कैम्पों पर भारतीय वायु सेना की भीषण बमबारी**

भारतीय वायुसेना ने 26 फरवरी को सुबह लगभग 3.30 बजे नियंत्रण रेखा पार करके जैश-ए-मोहम्मद के कई आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया। दरअसल, भारतीय वायुसेना के करीब 12 मिराज विमानों ने पाकिस्तान के...

वैचारिकी

हमारी सांस्कृतिक एकता 17

श्रद्धांजलि

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले... 20

लेख

अब चुप होकर नहीं बैठेगा नया भारत 22

भारत के विपक्ष के पास सीखने के लिए बहुत कुछ है 24

अन्य

'जहां-जहां कांग्रेस की सरकारें रहीं, वहां-वहां नक्सलवाद पनपा' 13

390 कैंसर रोधी गैर-अनुसूचित दवाओं की एमआरपी 87... 16

सात चरण में 11 अप्रैल से 19 मई तक होंगे लोकसभा चुनाव 21

'भारतीय सेना आज दुनिया की सबसे मजबूत सेनाओं में से एक है' 23

प्रधानमंत्री ने बक्सर और खुर्जा ताप विद्युत संयंत्रों की आधारशिला...26

सेना को जल्द मिलेगी घातक असॉल्ट राइफल AK-203 27

प्रधानमंत्री द्वारा अहमदाबाद में विभिन्न विकास परियोजनाओं... 29

कुंभ स्नान के बाद नरेंद्र मोदी ने सफाईकर्मियों के पैर धोए 30

पिछले साढ़े चार वर्षों में गंगा कार्यों के लिए 27,000 करोड़... 31

आयुष्मान भारत के अंतर्गत शीघ्र ही 5 करोड़ लाभार्थियों को... 32

वीर सपूतों की शहादत आतंक को समूल नष्ट करने के लिए 33

11 **देश की जनता 'फिर एक बार, मोदी सरकार' बनाने के लिए संकल्पबद्ध: अमित शाह**

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 2 मार्च को अमर शहीद स्टेडियम...

12 **'श्री नरेन्द्र मोदी के मजबूत और निर्णायक नेतृत्व में भारत सुरक्षित है'**

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 26 फरवरी को महाराजा सुहेलदेव और परमवीर चक्र हवलदार अब्दुल...

14 **प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन योजना का शुभारंभ**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 मार्च को गुजरात के वस्त्रल में प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन (पीएम-एसवाईएम) योजना का शुभारंभ...

15 **राष्ट्र को समर्पित हुआ राष्ट्रीय युद्ध स्मारक**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 25 फरवरी को नई दिल्ली में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक राष्ट्र को समर्पित...

प्रकाशक एवं मुद्रक: डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा मुद्रित, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास के लिए डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा प्रकाशित, एच.टी. मीडिया लिमिटेड, बी-2, सेक्टर-63, नोएडा (उ.प्र.)-201307 से मुद्रित एवं डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी.-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित। सम्पादक- प्रभात झा

twitter

@narendramodi

वो कहते हैं, आओ मिलकर मोदी को खत्म करें। मैं कहता हूं, आओ मिलकर गरीबी, भ्रष्टाचार, कुपोषण दूर करें। आओ मिलकर देश का विकास करें।

@AmitShah

एक तरफ़ 25 साल में एक भी छुट्टी न लेने वाला और 24 घंटे में से 18 घंटे काम करने वाला जनसेवक है तो वहीं दूसरी ओर महीनों तक ग़ायब रहने वाला शहज़ादा। देश को मोदी जी के रूप में एक ऐसा प्रधानमंत्री मिला है जिसने राष्ट्र और जन सेवा को ही अपने जीवन का धर्म मान लिया है।

@Ramlal

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश आतंकवाद के विरुद्ध दृढ़ता से खड़ा हो तथा देशभर के हर घर में विकास का उजाला फैले, महिला मोर्चा के 'कमल ज्योति संकल्प' में कमल ज्योति जलाकर सभी ने ये संकल्प लिया।

facebook

मुख्यमंत्री के रूप में हमने भावांतर के पैसे का बजट में प्रावधान किया था, अब कांग्रेस इधर-उधर की बात कर रही है कि वहां से पैसा आयेगा तब देंगे, यहां से पैसा आयेगा तब देंगे। बोनस देने का जब लिखा था, तब यह लिखा था कि वहां से आयेगा, तब देंगे? सरकार किसानों के साथ छल न करे, उनका पैसा दे।

— शिवराज सिंह चौहान

पिछले 23 महीनों में हमने उत्तर प्रदेश की बिगड़ी हुई व्यवस्था को संभाला और कानून व्यवस्था में सुधार किया। प्रयागराज में कुंभ व वाराणसी में प्रवासी भारतीय दिवस का भव्य आयोजन प्रदेश की व्यवस्था में आये सुधारों का साक्षी है।

देश की सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर राजनीति नहीं होनी चाहिए, सेना के शौर्य एवं पराक्रम पर संदेह नहीं करना चाहिए बल्कि शहीदों का सम्मान होना चाहिए। हमने शहीदों का सम्मान करते हुए शहीद हुए जवानों के परिजनों को जल्द ही नौकरियों के नियुक्ति पत्र दे दिए।

— योगी आदित्यनाथ

कमल संदेश परिवार की ओर से
सुधी पाठकों को
होली (21 मार्च)
की हार्दिक शुभकामनाएं!

अतुलनीय पराक्रम एवं अदम्य शौर्य का अभिनंदन

आतंकवाद के विरुद्ध अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई करते हुए भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान में घुसकर आतंकी ठिकानों पर साहसिक बमबारी की है। भारतीय वायुसेना के जांबाजों की बहादुरी से पाकिस्तान के बालाकोट में स्थित जैश–ए–मोहम्मद का आतंकी ठिकाना तबाह हो गया। वायुसेना की यह साहसिक अभियान इतिहास के पन्नों में सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो चुका है। पुलवामा में हुए कायराना आतंकी हमलों में शहीद 40 सीआरपीएफ जवानों की शहादत बेकार नहीं जाने दी गई है। आज पूरा देश भारतीय वायुसेना के अदम्य साहस एवं पराक्रम से गौरवान्वित है और पूरे विश्व में आतंकी ठिकानों पर कार्रवाई करने के भारत के अधिकार की स्वीकारा जा रहा है। हर भारतीय को पराक्रमी योद्धाओं पर आज गर्व है।

यह अत्यंत दुर्भाग्यजनक है कि पाकिस्तान न केवल आतंकियों के लिए एक सुरक्षित पनाहगार बन गया है, बल्कि इन्हें पाकिस्तान के सीमापार कर आतंकी हमले करने के लिए हर प्रकार की सहायता एवं सुविधायें भी उपलब्ध करायी जा रही हैं। अपने भारत विरोधी नीतियों के अंतर्गत यह लगातार जम्मू एवं कश्मीर में आतंकी गुटों को खड़ा कर रहा है। इतना ही नहीं, इन आतंकियों को प्रशिक्षण, हथियार एवं अन्य साजो–समान भी यहीं से मिलता है और आइएसआई एवं पाकिस्तानी सेना की सरपरस्ती में कई ट्रेनिंग कैंप भी चलाये जा रहे हैं। आतंकी हमलों की योजना पाकिस्तान में बनती है और उसे अंजाम भारत में दिया जाता है। भारत कभी भी 26/11 मुंबई समेत उन अनगिनत आतंकी हमलों को नहीं भूल सकता, जिसमें हजारों निर्दोष अपने प्राण गंवा चुके हैं। पूरे विश्व के नेताओं एवं भारत के द्वारा बार–बार कहे जाने के बाद भी पाकिस्तान ने इन आतंकी गिरोहों के विरुद्ध कोई ठोस कार्रवाई करने की बात तो दूर, इन आतंकी गतिविधियों को खुला समर्थन देती रही है। पाकिस्तान द्वारा आतंकियों को शर्मनाक समर्थन न केवल मानवता के विरुद्ध अपराध है, बल्कि अत्यंत निदंनीय भी। पाकिस्तान के इन कुकृत्यों पर किसी भी प्रकार की कठोर कार्रवाई भारत का अधिकार है।

> पाकिस्तान में फल–फूल रहे आतंकियों के विरुद्ध भारत के साहसिक एवं कठोर कदम को पूरे विश्व में समर्थन मिल रहा हैं। पूर्व में 'सर्जिकल स्ट्राइक' और अब 'एयर स्ट्राईक' के द्वारा भारत ने यह जता दिया है कि हर आतंकी हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।

भारतीय सेना एवं वायुसेना ने नियंत्रण रेखा पार कर पाकिस्तान तक में घुसकर आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर अपने अदम्य पराक्रम एवं शौर्य का परिचय दिया है। सुरक्षा बलों का पराक्रम तब भी दिखा था, जब उरी आतंकी हमले के बाद वीर जवानों ने नियंत्रण रेखा पार कर 'सर्जिकल स्ट्राइक' की थी तथा आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया था। लेकिन शायद इस कठोर कार्रवाई से भी पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। पाकिस्तान के द्वारा लगातार समर्थन एवं सहयोग मिलने के कारण पुलवामा के आतंकी हमले में 40 सीआरपीएफ जवान शहीद हो गए। पूरा देश आक्रोश से भर उठा। इस कायरतापूर्ण आतंकी हमले का जवाब वायुसेना ने अपने पराक्रम से दिया और बालाकोट में स्थित जैश–ए–मोहम्मद के ठिकानों को धूल में मिला दिया। पाकिस्तान के आतंकी गुटों को कड़ा पाठ तो पढ़ाया ही, साथ ही उन्हें संदेश दिया कि वे चाहे पाकिस्तान के किसी भी कोने में छिपा हो, भारत उन्हें चुन–चुन कर मारने की क्षमता रखता है। पाकिस्तान को भी यह कड़ा संदेश है कि अब उसे अपने जमीन से भारत विरोधी गतिविधियां चलाने की इजाजत नहीं दी जा सकती और उसके आतंकियों के किसी प्रकार के समर्थन का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।

पाकिस्तान में फल–फूल रहे आतंकियों के विरुद्ध भारत के साहसिक एवं कठोर कदम को पूरे विश्व में समर्थन मिल रहा हैं। पूर्व में 'सर्जिकल स्ट्राइक' और अब 'एयर स्ट्राईक' के द्वारा भारत ने यह जता दिया है कि हर आतंकी हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। एयर स्ट्राइक के बाद जब भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तानी हवाई हमले को करारा जवाब दिया तथा विंग कमांडर अभिनंदन की शीघ्र वापसी से विश्व में अपने प्रति बढ़ते समर्थन को भी प्रमाणित कर दिया। पाकिस्तान को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि आज भारत का नेतृत्व मजबूत इरादों वाले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के हाथ में है, जो दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति एवं अडिग निर्णय के लिए जाने जाते हैं। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस और इसके सहयोगी दल सेना के अदम्य पराक्रम का भी राजनीतिकरण करने से भी नहीं चूक रहे। आज अपनी इस राजनीति में वे पाकिस्तान की भाषा बोल रहे हैं। भारतीय सेना एवं वायुसेना पर प्रश्नचिह्न खड़े करने पर पूरे देश में उनकी कठोर भर्त्सना हो रही है। आने वाले दिनों में कांग्रेस को इसका भयंकर परिणाम भुगतना पड़ेगा तथा जनता द्वारा इसे भारतीय राजनीति के और अधिक हाशिये पर धकेल दिया जाएगा। राष्ट्र अपने वीर सपूतों का अभिनंदन करता है जिन्होंने मां भारती की सेवा में अतुलनीय पराक्रम एवं अदम्य शौर्य का का परिचय दिया है। ■

shivshakti@kamalsandesh.org

पाकिस्तान स्थित आंतकी कैम्पों पर भारतीय वायु सेना की भीषण बमबारी

भारतीय वायुसेना ने 26 फरवरी को सुबह लगभग 3.30 बजे नियंत्रण रेखा पार करके जैश-ए-मोहम्मद के कई आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया। दरअसल, भारतीय वायुसेना के करीब 12 मिराज विमानों ने पाकिस्तान के मुजफ्फराबाद, बालाकोट और चकोटी में आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के कई ठिकानों पर भीषण बमबारी कर उन्हें नष्ट कर दिया। मिडिया रिपोर्ट के अनुसार लगभग 300 से ज्यादा आतंकवादियों के मरने की आशंका है। इस हमले पर विदेश सचिव ने कहा कि 14 फरवरी, 2019 को पाकिस्तान के आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) ने एक आत्मघाती आतंकी हमला किया, जिसमें सीआरपीएफ के 40 बहादुर जवान शहीद हो गए। जेईएम पाकिस्तान में पिछले दो दशक से सक्रिय है और इसका नेतृत्व मसूद अजहर बहावलपुर में अपने मुख्यालय से कर रहा है। इस संगठन को संयुक्त राष्ट्र ने प्रतिबंधित घोषित कर रखा है। संगठन दिसंबर, 2001 में भारतीय संसद और जनवरी, 2016 में पठानकोट वायुसैनिक अड्डे पर हमलों सहित अनेक आतंकवादी हमलों के लिए जिम्मेदार है।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर में इनके प्रशिक्षण शिविरों के स्थान की जानकारी समय-समय पर पाकिस्तान को प्रदान की जाती रही है, हालांकि पाकिस्तान इसके अस्तित्व का खंडन करता रहा है। हजारों जिहादियों को प्रशिक्षण देने योग्य इतनी विशाल प्रशिक्षण सुविधाएं पाकिस्तान के अधिकारियों की जानकारी के बिना काम नहीं कर सकती।

उन्होंने कहा कि भारत बार-बार पाकिस्तान से आग्रह करता रहा है कि

@narendramodi
सौगंध मुझे इस मिट्टी की, मैं देश नहीं झुकने दूंगा...

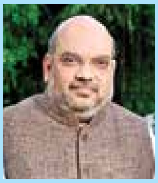

@AmitShah
ऊरी के बाद सर्जिकल स्ट्राइक और पुलवामा के बाद एयर स्ट्राइक से पूरी दुनिया जान चुकी है कि आज भारत में 2004 से 2014 वाली सरकार नहीं, बल्कि 2014 से 2019 वाली मोदी सरकार है। मोदी जी द्वारा इतने कम समय में बहादुर अभिनंदन को वापस लाना भारत की बहुत बड़ी कूटनीतिक विजय है।

भारतीय वायु सेना द्वारा पाकिस्तान स्थित आंतकी कैम्पों पर हुए हमले पर समाचार पत्रों की सुर्खियां

- पाकिस्तान में 1971 के बाद घुसकर हवाई हमला, जैश का ठिकाना ध्वस्त, 300 आतंकी ढेर, पुलवामा का हिसाब पूरा
  -दैनिक जागरण
- एयरफोर्स ने 48 साल बाद पाकिस्तान की सरहद लांघी, आतंकी अड्डा तबाह
  -दैनिक भाष्कर
- पाकिस्तान में घुसकर जैश के तीन बड़े ठिकाने तबाह
  -अमर उजाला
- पलक झपकते खाक में मिले आतंकी कैंप, 300 हलाक
  -पायनियर
- 40 के बादे मारे 400
  -पंजाब केसरी
- शहीदों की तेरहवीं से पहले बदला
  -नवभारत टाइम्स
- जैश का जोश जमींदोज
  -हिन्दुस्तान

वह जेईएम के खिलाफ कार्रवाई करे, ताकि जिहादियों को पाकिस्तान के अंदर प्रशिक्षित करने और उन्हें हथियार देने से रोका जा सके। पाकिस्तान ने अपनी जमीन पर आतंकवादियों के आधारभूत ढांचे को खत्म करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया।

विदेश सचिव ने अपने वक्तव्य में कहा कि विश्वसनीय जानकारी मिली थी कि जेईएम देश के विभिन्न भागों में एक अन्य आत्मघाती आतंकी हमला करने का प्रयास कर रहा है और इसके लिए फिदायीन जिहादियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। आसन्न खतरे को देखते हुए एहतियाती हमला करना अनिवार्य हो गया था। खुफिया जानकारी के आधार पर भारत ने आज तड़के बालाकोट में जेईएम के सबसे बड़े प्रशिक्षण शिविर पर हमला किया।

उन्होंने कहा कि इस हमले में बड़ी संख्या में जेईएम आतंकवादी, प्रशिक्षक, वरिष्ठ कमांडर और जिहादियों के ऐसे समूहों का सफाया कर दिया गया, जिन्हें फिदायीन कार्रवाई का प्रशिक्षण दिया जा रहा था।

विदेश सचिव ने कहा कि सरकार आतंकवाद की बुराई से निपटने के लिए सभी आवश्यक उपाय करने के लिए प्रतिबद्ध है। अतः यह असैनिक कार्रवाई विशेष तौर पर जेईएम शिविरों को निशाना बनाते हुए की गई। इन ठिकानों का चयन करते समय इस बात को भी ध्यान में रखा गया कि नागरिकों को हताहत होने से बचाया जा सके। यह ठिकानें किसी भी नागरिक बस्ती से दूर एक पहाड़ी पर घने जंगलों में स्थित हैं।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान सरकार ने जनवरी 2004 में यह प्रतिबद्धता व्यक्त की थी कि वह उसके नियंत्रण वाली अपनी जमीन अथवा क्षेत्र का इस्तेमाल भारत के खिलाफ आतंकवाद के लिए नहीं होने देगा। हमें उम्मीद है कि पाकिस्तान अपनी प्रतिबद्धता पर कायम रहेगा और जेईएम और अन्य शिविरों को नष्ट करने के लिए आगे कार्रवाई करेगा तथा कार्रवाइयों के लिए आतंकवादियों को जवाबदेह बनाएगा।

वायु सेना द्वारा बालाकोट हमले के बाद पाकिस्तानी वायु सेना ने भारत की सीमा में घुसने की कोशिश की। भारतीय वायु सेना के मिग 21 बाइसन विमान ने पाकिस्तानी वायु सेना के एफ 16 को मार गिराया। इस हवाई लड़ाई में विमान मिग 21 बाइसन के पायलट विंग कमांडर अभिनंदन वर्धमान पाकिस्तानी क्षेत्र में गिर गए। इसके बावजूद भारत के भारी दबाव के चलते महज 60 घंटे के भीतर पाकिस्तान की कैद से भारतीय विंग कमांडर अभिनंदन सुरक्षित भारत वापस लौट आए।

इतिहास में ऐसा आज तक नहीं हुआ था। पिछले सात दशकों में जो भी भारतीय सैनिक, पाकिस्तान के कब्जे में गया उसे या तो अमानवीय यातनाएं झेलनी पड़ीं या फिर क्षत-विक्षत हालत में उसका शव भारत भेज दिया गया।

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अभिनंदन की वापसी पर ट्वीट करते हुए उनका स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी ने ट्विटर पर लिखा, “वेलकम होम विंग कमांडर अभिनंदन! आपके अदम्य साहस पर देश को गर्व है। हमारी सशस्त्र सेनाएं 130 करोड़ भारतीयों की प्रेरणा हैं। वंदे मातरम!” गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने अभिनंदन की वापसी पर ट्वीट किया, “वेलकम होम। पूरे देश को विंग कमांडर अभिनंदन पर गर्व है।” ■

बहुत हो गया, हम अनंत काल तक पीड़ित नहीं रह सकते : नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत को निशाना बना रहे आतंकवादी ताकतों को कड़ी चेतावनी देते हुये कहा कि देश हमेशा पीड़ित नहीं रह सकता। पुलवामा और उरी में हुए आतंकवादी हमलों का हवाला देते हुये उन्होंने कहा, "बहुत हो गया।" उन्होंने कहा, "हम अनंत काल तक पीड़ित नहीं रह सकते।"

केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के 50वें स्थापना दिवस समारोह के मुख्य अतिथि प्रधानमंत्री ने कहा कि जब देश दुश्मन पड़ोसी का सामना कर रहा हो और सीमा पार से देश के भीतर हो रहे षड्यंत्रों को शह मिल रहा हो, तो ऐसे में सीआईएसएफ जैसे सुरक्षा बलों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है।

प्रधानमंत्री ने कहा, "जब पड़ोसी बहुत शत्रुतापूर्ण हो और युद्ध लड़ने की क्षमता नहीं रखता हो और सीमा पार से देश में षड्यंत्र कर रहे तत्वों को शह मिल रहा हो और इस तरह की मुश्किल परिस्थितियों में जब आतंक का भयावह चित्र सामने आए, तब देश और संस्थानों

की सुरक्षा (सुनिश्चित करना) बहुत चुनौतीपूर्ण होता है।" श्री मोदी ने यह भी कहा कि वीआईपी संस्कृति कभी-कभी सुरक्षा संरचना में अवरोध पैदा करती है। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार को कभी-कभी कुछ फैसले करने पड़ते हैं, इसलिए कुछ मजबूत कदम उठाए। ■

पाकिस्तान में जैश-ए-मोहम्मद के शिविर पर हमारी कार्रवाई सफल रही: विदेश मंत्रालय

भारत ने कहा कि पाकिस्तान में जैश-ए-मोहम्मद के शिविर पर की गई उसकी कार्रवाई सफल रही और साथ ही देश ने यह भी दिखा दिया कि वह सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने को प्रतिबद्ध है।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता श्री रवीश कुमार ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि भारतीय वायुसेना के विमान मिग 21 बाइसन के पायलट विंग कमांडर अभिनंदन वर्धमान ने पाकिस्तानी वायुसेना के एक एफ-16 लड़ाकू विमान को मार गिराया तथा इसके चश्मदीद गवाह और इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य मौजूद हैं।

उन्होंने कहा, ''हमने एम्राम मिसाइल के टुकड़ों के रूप में सबूत भी साझा किए हैं, जो मौके से बरामद किए गए थे और जिसे (एम्राम मिसाइल) पाकिस्तानी वायुसेना का केवल एफ-16 विमान ही ले जाने में सक्षम है।''

श्री कुमार ने कहा, ''हमारी गैर सैन्य (किसी सैनिक ठिकाने और नागरिक क्षेत्र को निशाना न बनाने) आतंकवाद-रोधी कार्रवाई वांछित उद्देश्य प्राप्त करने में सफल रही। इससे पता चलता है कि हम सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने को प्रतिबद्ध हैं।"

श्री कुमार ने कहा कि हमारे सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने की पाकिस्तान की असफल कोशिश के दौरान हमने केवल एक विमान खोया। उन्होंने कहा, "अगर पाकिस्तान के पास भारत का दूसरा विमान गिराने के सबूत हैं, जैसाकि वह दावा करता है तो उसने वे साझा क्यों नहीं किए।" श्री कुमार ने कहा कि पुलवामा आतंकवादी हमले के बाद से अंतरराष्ट्रीय समुदाय भारत के साथ खड़ा है।

उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि पाकिस्तान अब भी पुलवामा हमले को जैश-ए-मोहम्मद द्वारा अंजाम दिए जाने की बात को नकार रहा है, जबकि स्वयं इस आतंकवादी संगठन ने इसकी जिम्मेदारी ली है। इस हमले में सीआरपीएफ के 40 जवान शहीद हो गए थे। श्री कुमार ने कहा कि पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूह बिना किसी बाधा के अपनी गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को अपनी जमीन से संचालित हो रहे आतंकी समूहों के खिलाफ ठोस, प्रामाणिक और लगातार कार्रवाई करनी चाहिए। ■

देश भर में जश्न

Don't justifies
Surgical Strike-2
Pakistan is a terrorist nation
Terrorism down down
Pakistan down down
How's The Josh..?
हम कितने और बरदाश्त कर सकते
भारतीय हवाई सेनाने
SALUTE
पाक अब
INDIA'S SURGICAL STRIKES 2.0
12
Mirage 2000 jets used
1000
kg explosives dropped
FOR THE FIRST TIME SINCE 1971
USES MIRAGE JETS
जिन्दाबाद
पाकिस्तान

प्रमुख समाचार पत्रों की टिप्पणियां

एक और सख्त संदेश

पुलवामा हमले के बाद पाकिस्तान की बहानेबाजी को देखते हुए यह आवश्यक हो गया था कि उसे न केवल सबक सिखाया जाए, बल्कि यह संदेश भी दिया जाए कि भारत अब उसकी चालबाजी में आने वाला नहीं है। यह वक्त बताएगा कि पाकिस्तान कोई सही सबक सीखता है या नहीं, लेकिन इसमें दोराय नहीं कि भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों ने उसकी सीमा में घुसकर जैश-ए-मोहम्मद के सबसे बड़े आतंकी अड्डे पर हमला करके यह बता दिया कि भारत के सहने की एक सीमा है। यह बेहद महत्वपूर्ण है कि हमारे लड़ाकू विमानों ने नियंत्रण रेखा के साथ पाकिस्तान की मूल सीमा रेखा भी पार कर एक तरह से उसके मर्म पर प्रहार किया। बालाकोट पाकिस्तान के सैन्य मुख्यालय रावलपिंडी से ज्यादा दूर नहीं है। पाकिस्तान को यह समझ आ जाना चाहिए कि अगर भारत के लड़ाकू विमान बिना किसी बाधा बालाकोट तक पहुंच सकते हैं तो वे रावलपिंडी भी पहुंच सकते हैं। उसे यह भी समझ आना चाहिए कि परमाणु बम के इस्तेमाल की उसकी धमकियां अब काम आने वाली नहीं है।

संपादकीय: दैनिक जागरण

बड़े सबक के बाद

रात जब पूरा देश गहरी नींद सो रहा था, तो ग्वालियर से उड़े 12 मिराज-2000 लड़ाकू विमानों ने हमें एक नई सुबह देने की भूमिका लिख दी। इतना ही नहीं, पाक अधिकृत कश्मीर के पार खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के बालाकोट में गिराए गए एक हजार किलो के बमों ने उस पाकिस्तान की चेतना को बुरी तरह झझकोर दिया, जिसे अपने अस्तित्व को बरकरार रखने का एकमात्र फार्मूला आतंकवाद में ही नजर आता है। भारतीय बमवर्षकों का निशाना बालाकोट के वे आतंकी शिविर थे, जिन्हें मसूद अजहर का संगठन जैश-ए-मोहम्मद संचालित करता है। कुल कितने बम गिराए गए, यह संख्या अभी स्पष्ट नहीं है, लेकिन एक हजार किलो के बम का अर्थ यह तो है ही कि इनकी मार का क्षेत्र बहुत बड़ा होगा। कुछ अपुष्ट खबरों में बताया गया है कि हमले में दो से तीन सौ आतंकवादी मारे गए हैं।

भारत ने मंगलवार के ऑपरेशन को नॉन मिलेटरी प्रिवेंटिव स्ट्राइक यानी गैर सैन्य रक्षात्मक अभियान कहा है। इसे आम भाषा में सर्जिकल स्ट्राइक कहा जा रहा है, उसकी सही परिभाषा भी शायद यही है। यह सैनिक अभियान नहीं था, क्योंकि इसमें न सेनाओं को निशाना बनाया गया और न ही सैनिक ठिकानों को। इसमें किसी सैनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर को भी नुकसान नहीं पहुंचाया गया। इसका निशाना सिर्फ आतंकवादियों के प्रशिक्षण शिविर थे। इनमें जैश-ए-मोहम्मद की अगुवाई में वे आतंकवादी प्रशिक्षण पा रहे थे, जिन्हें भारत पर हमला बोलने के लिए तैयार किया जा रहा था। इस अर्थ में भारत की यह कार्रवाई रक्षात्मक भी है। यह कुछ इस तरह से की गई है कि पाकिस्तान के पास जवाब में कुछ करने की गुंजाइश नहीं बची। इसीलिए वह एक तरफ तो इसका जरा भी असर पड़ने से इनकार कर रहा है, तो दूसरी तरफ संयुक्त राष्ट्र में जाने का राग भी अलाप रहा है।

संपादकीय: हिंदुस्तान

आतंकवाद पर प्रहार

पुलवामा में आतंकी हमले के बाद से भारत ने ही नहीं पूरी दुनिया ने पाकिस्तान से आतंकी संगठनों के खिलाफ कार्रवाई करने को कहा, लेकिन पाकिस्तान ने जबानी जमाखर्च के सिवाय कुछ नहीं किया। पिछले कुछ वर्षों से भारत आतंकी कार्रवाइयों से आजिज आ चुका है। उसने बार-बार पाकिस्तान को सबूत दिए, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर यह मुद्दा उठाया, मसले को कूटनीतिक तरीके से सुलझाने की कोशिश भी की, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। बार-बार विभिन्न स्रोतों से ऐसी खबरें आती रहीं कि पाकिस्तान के कई इलाकों में अनेक आतंकी संगठन बाकायदा अपने कैंप चला रहे हैं। कई देशों की खुफिया रिपोर्टों और अध्ययनों में यह बात भी सामने आई कि इन संगठनों को पाकिस्तानी सेना और खुफिया एजेंसी आईएसआई का समर्थन हासिल है। शायद यही वजह थी कि उन संगठनों के कई नेता खुलेआम वहां भारत के खिलाफ जहर उगलते नजर आते हैं। इन स्थितियों में भारत के पास एक सख्त संदेश देने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था।

पुलवामा हमले के बाद अमेरिका और अन्य कई देशों ने हमारे पक्ष का समर्थन किया और स्पष्ट कहा कि भारत को आत्मरक्षा का अधिकार है। अमेरिका खुद भी पाकिस्तान की सीमा में गहराई तक घुसकर आतंकवाद के विरुद्ध इस तरह के कदम उठा चुका है। भारत ने साफ किया है कि यह हमला पाकिस्तान और पाकिस्तानियों के खिलाफ नहीं है। भारतीय वायुसेना ने केवल जैश-ए-मोहम्मद के उन ठिकानों को निशाना बनाया जो नागरिक इलाकों से दूर घने जंगल में पहाड़ियों पर थे। पाकिस्तान के विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी का कहना है कि पाकिस्तान माकूल समय पर इसका जवाब देगा। बेहतर होगा कि पाकिस्तान हालात को समझे। भारतीय कार्रवाई आतंकियों के खिलाफ है जिनसे खुद पाकिस्तान के लोग भी परेशान हैं।

संपादकीय: नवभारत टाइम्स

देश की जनता 'फिर एक बार, मोदी सरकार' बनाने के लिए संकल्पबद्धः अमित शाह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 2 मार्च को अमर शहीद स्टेडियम, उमरिया से देशव्यापी विजय संकल्प बाईक रैली का शुभारंभ किया। वे स्वयं भी बाईक रैली में शामिल हुए और कुछ दूर तक सफ़र भी किया। देश भर में मंडल, जिला एवं राज्य स्तर पर लगभग 3800 जगहों पर एक करोड़ से अधिक भाजपा कार्यकर्ताओं ने विजय संकल्प बाईक रैली निकालकर जन-जन से संपर्क किया और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार की उपलब्धियों को उनके साथ साझा किया। इसके पहले श्री शाह ने विशाल संख्या में उपस्थित पार्टी कार्यकर्ताओं एवं आम नागरिकों को संबोधित किया।

ज्ञात हो कि विगत तीन फरवरी को श्री शाह ने पार्टी के एक माह तक चलने वाले व्यापक अभियान "संकल्प पत्रः भारत के मन की बात, मोदी के साथ" कार्यक्रम की शुरुआत के समय चार कार्यक्रमों की घोषणा करते हुए जन-जन तक महासंपर्क करने की बात कही थी। उन्होंने कहा कि देश की जनता 'फिर एक बार, मोदी सरकार' बनाने के लिए संकल्पबद्ध है और यही संदेश लेकर एक करोड़ से ज्यादा पार्टी कार्यकर्ता विजय संकल्प बाईक रैली के माध्यम से देश के सवा सौ करोड़ मतदाताओं से संपर्क करेंगे।

श्री शाह ने सबसे पहले विग कमांडर अभिनंदन वर्तमान की सकुशल वापसी पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि पाकिस्तान के F-16 को गिराकर अदम्य वीरता का परिचय देने वाले विंग कमांडर अभिनंदन की वापसी पर हम उनका स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं एवं हृदय की गहराइयों से आनंद व्यक्त करते हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि राहुल गांधी के नेतृत्व में विपक्ष का तथाकथित महामिलावटी ठगबंधन परिवारवाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद, तुष्टिकरण और धन-बल के आधार पर काम करती है जबकि भारतीय जनता पार्टी जन-कल्याण के प्रति कटिबद्धता और जनसंपर्क के आधार पर देश के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहती है, यही भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस में अंतर है। सरकार में आने पर भारतीय जनता पार्टी का लक्ष्य 'अंत्योदय' के सिद्धांत पर गरीब कल्याण और 'सबका साथ, सबका विकास' होता है और चुनाव में हम अपनी उपलब्धियों के आधार पर जनसंपर्क करते हैं और अपने विजन को जनमानस के साथ साझा करते हैं, यह हमारी परंपरा, हमारी कार्यसंस्कृति रही है।

श्री शाह ने कहा कि चाहे देश के लगभग 22 करोड़ लाभार्थियों के साथ महासंपर्क अभियान हो, कमल दीपावली कार्यक्रम हो, 'मेरा परिवार, भाजपा परिवार' का कैंपेन हो या फिर आज से शुरू हो रही विजय संकल्प बाईक रैली, हमारे सभी कार्यक्रम जनसंपर्क के लिए हैं। उन्होंने कहा कि विजय संकल्प बाईक रैली के माध्यम से पार्टी कार्यकर्ता देश के हर बूथ, हर गांव, हर शहर, हर गली जायेंगे, मतदाताओं से संपर्क करेंगे और चुनाव के भारतीय

जनता पार्टी के विजन को उनके साथ साझा करेंगे। उन्होंने सभा में उपस्थित लोगों से सवाल पूछते हुए कहा कि क्या चुनाव किसी को प्रधानमंत्री बनना है या कोई शहजादा गद्दी पर बैठना चाहता है या फिर कोई परिवार सत्ता में आना चाहता है, इसके लिए होता है या फिर देश को प्रगति के पथ पर आगे ले जाने के लिए?

उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का स्पष्ट मानना है कि चुनाव देश के लगभग 50 करोड़ गरीबों के घर में सुख-शांति लाने, देश के अर्थतंत्र को गति देने, देश के गौरव को दुनिया भर में पुनः प्रतिष्ठित करने, देश की सुरक्षा को सुदृढ़ व सुनिश्चित करने, देश को दुनिया की महासत्ता बनाने और आतंकवाद को पनाह देने वाले पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए होना चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसा महामिलावटी ठगबंधन जिसका न कोई नेता है, न नीति है और न ही कोई सिद्धांत है - देश का कभी भला नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि यदि कोई सरकार देश के लगभग 50 करोड़ गरीबों के कल्याण के लिए, देश की सुरक्षा और देश की समृद्धि के लिए काम कर सकती है तो वह केवल और केवल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार है क्योंकि आजादी के 70 सालों में 55 वर्ष तक कांग्रेस पार्टी के एक ही परिवार का शासन होने के बावजूद देश हर क्षेत्र में पिछड़ता ही चला गया। ■

'श्री नरेन्द्र मोदी के मजबूत और निर्णायक नेतृत्व में भारत सुरक्षित है'

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 26 फरवरी को महाराजा सुहेलदेव और परमवीर चक्र हवलदार अब्दुल हमीद की धरती गाजीपुर (उत्तर प्रदेश) के ग्राम पंचायत तैतारपुर (मौजा - गौरहट, ब्लॉक सैदपुर) में एक दलित परिवार श्री रुद्रप्रसाद जी के घर कमल दीप जलाकर पार्टी के देशव्यापी कार्यक्रम 'कमल ज्योति संकल्प अभियान' का शुभारंभ किया। उन्होंने श्री रुद्रप्रसाद जी के घर गुड़ और चने का भी आनंद लिया। उन्होंने इससे पहले उन्होंने ग्रामीणों के साथ 'चौपाल' भी किया और मोदी द्वारा चलाई जा रही लोक-कल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों पर चर्चा भी की। ज्ञात हो कि कमल ज्योति संकल्प अभियान के तहत शाम 6 बजे से दोपहर 9 बजे तक देश के 22 करोड़ गरीब लाभार्थी अपने घर के सामने कमल दीप जला कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को फिर से चुनने का संकल्प ले रहे हैं। यह कमल दीप प्रतीक है विकास का, विश्वास का और मोदी जी के नेतृत्व में हो रहे जन-कल्याण का। देश के लगभग 22 करोड़ गरीब लाभार्थी और भाजपा कार्यकर्ता #BJPKamalJyoti हैशटैग के साथ अपनी फ़ोटो सोशल मीडिया पर शेयर कर रहे हैं।

श्री शाह ने कहा कि भारत की जाबांज सेना को उनकी बहादुरी और वीरता के लिए बधाई देता हूं और उन्हें सलाम करता हूं। आज की कार्रवाई ने यह पुनः साबित किया है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मजबूत और निर्णायक नेतृत्व में भारत सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि आज की यह कार्रवाई नये भारत की इच्छाशक्ति और संकल्प को दर्शाती है। यह नया भारत किसी भी सूरत में आतंकवाद को बर्दाश्त नहीं करेगा और न ही आतंकवादियों और उनके संरक्षकों को माफ करेगा। उन्होंने कहा कि जिनकी दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति, निर्णायक नेतृत्व और आतंकवाद के खिलाफ लड़ने की मंशा पूरी दुनिया में जानी जाती है, ऐसे हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मैं देश की जनता और पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं की ओर से हार्दिक अभिनंदन करता हूं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि आज तड़के सुबह ही पूरे देश को सुकून देने वाला समाचार प्राप्त हुआ कि भारत की वीर सेना ने पाकिस्तान में एयर स्ट्राइक कर आतंकियों का सफाया कर दिया। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले पाकिस्तान प्रेरित आतंकवादियों ने पुलवामा में कायराना हमला कर हमारे कई जवानों को शहीद कर दिया। समग्र देश की मांग थी कि आतंकियों के खलाफ ऐसी कार्रवाई होनी चाहिए कि आगे ऐसी घटना को अंजाम देने से पहले पाकिस्तान सौ बार सोचे। आज हमें गर्व है कि हमारे जांबाज रणबांकुरों ने आतंकियों को ईंट का जवाब पत्थर से दिया। मैं देशभर के पार्टी कार्यकर्ता और देश की जनता की ओर से वीर जवानों को शत-शत नमन करता हूं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जैसी मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति और आतंकवाद के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' की भावना विश्व में किसी भी नेता

के पास नहीं है। प्रधानमंत्री बनने के साथ ही श्री नरेन्द्र मोदी ने आतंकवादी विचारों, आतंकी घटनाओं, आतंकी संगठनों और आतंकवादियों - इन चारों के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' की नीति अपनाई है। हम सबको इस बात का गर्व है कि आतंकवाद को फैलाने वाली जगह पर और आतंकवादियों पर भारत ने अपनी आत्मरक्षा में एयर स्ट्राइक किया। आज देश भर में शहीद जवानों के परिवार को शीतलता महसूस होती होगी, शहीद जवानों की आत्मा को शांति महसूस हो रही होगी।

श्री शाह ने कहा कि 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सुरक्षित भारत का वादा किया था। पहले उरी में हुए पाक प्रेरित आतंकवादी हमले के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक और अब आत्मरक्षा में एयर स्ट्राइक ने पूरी दुनिया को संदेश दिया कि देश की सेना और मोदी सरकार भारत की सुरक्षा के लिए किसी भी सीमा तक जा सकती है। इस एयर स्ट्राइक से सवा सौ करोड़ देशवासियों के आत्मविश्वास को एक नया संबल मिला है। समग्र राष्ट्र की जनता के मन में जोश है और विश्वास है कि मोदी सरकार आतंकवाद का सफाया करके रहेगी। ■

'जहां-जहां कांग्रेस की सरकारें रहीं, वहां-वहां नक्सलवाद पनपा'

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 7 मार्च को छत्तीसगढ़ के रायपुर स्थित इंडोर स्टेडियम में आयोजित चार लोकसभा के क्लस्टर कार्यकर्ताओं के विशाल सम्मेलन को संबोधित किया और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार की पांच वर्ष की उपलब्धियों पर चर्चा करते हुए पाकिस्तान में आतंकियों पर वायुसेना द्वारा की गई एयरस्ट्राइक और हमारे वीर जवानों की शहादत का अपमान करने वाली कांग्रेस एवं उसकी सहयोगी पार्टियों पर जमकर प्रहार किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने उपस्थित विशाल कार्यकर्ता सम्मेलन के समक्ष भारतीय जनता पार्टी की तुलना अन्य राजनीतिक पार्टियों से करते हुए भारतीय जनता पार्टी को इस अर्थ में भिन्न बताया कि जहां अन्य राजनीतिक पार्टियां अपने नेताओं के आधार पर चुनाव लड़ती और जीतती हैं, वहीं भारतीय जनता पार्टी देश की एकमात्र पार्टी है जो नेताओं के आधार पर नहीं बल्कि बूथ और शक्ति केन्द्रों पर खड़े कार्यकर्ताओं के आधार पर चुनाव लड़ती और जीतती है।

श्री शाह ने कार्यकर्ताओं को पूर्ण आश्वस्त करते हुए कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में एकबार फिर केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की जनता को दो माह में ही मालूम पड़ गया कि रमण सिंह की विकासवादी सरकार और चिट फंड की सरकार में क्या फर्क है। उन्होंने कहा कि अटल जी द्वारा निर्मित इस राज्य में 15 वर्षों में छत्तीसगढ़ को बदलने का काम भाजपा की रमण सिंह सरकार ने किया।

श्री शाह ने राज्य की कांग्रेस सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि इन्होंने केंद्र की आयुष्मान योजना को अधर में लटका दिया जिससे इस योजना के तहत जरूरतमंद गरीबों को 5 लाख रुपये मिलना मुश्किल हो गया। छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार ने सीबीआई के दरवाजे इसलिए बंद कर दिए क्योंकि इनके घोटाले-घपले पर पर्दा पड़ा रहे। इन्होंने किसान ऋण माफ़ी का वादा भी किया था, उसका क्या हुआ? बिजली बिल माफ़ करने का वादा किया लेकिन अब उसे आधा करने की बात कर रहे हैं। यही है कांग्रेस का दोहरा चरित्र। श्री शाह ने कहा कि हमने पुरुषार्थ किया। गरीबों के कल्याण के लिए अन्त्योदय का सिद्धांत अपनाया जिसे बदलने का काम राज्य की वर्तमान कांग्रेस सरकार कर रही है।

श्री शाह ने आंतरिक सुरक्षा के लिए कभी चुनौती बने नक्सलवाद की चर्चा करते हुए कहा कि जहां-जहां कांग्रेस की सरकारें रहीं, वहां-वहां नक्सलवाद पनपा और बढ़ा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रविरोधी टुकड़े

गैंग का साथ देने के लिए कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी जेएनयू पहुंच जाते हैं।

राहुल गांधी पर हमला जारी रखते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि देश की जनता ने कांग्रेस पार्टी को बहुमूल्य 55 साल दिए लेकिन एक ही परिवार की चार पीढ़ियों के शासन ने देश के विकास के लिए कुछ भी नहीं किया। एक ओर कांग्रेस पार्टी के एक परिवार के 55 वर्षों में देश विकास को तरसता रहा, वहीं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के केवल 55 महीनों के शासन में देश ने विकास की एक नई गति देखी है।

उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के 55 महीनों में देश के लगभग 6 करोड़ गरीब महिलाओं के घर में गैस कनेक्शन पहुंचाए गए, लगभग 8 करोड़ घरों में शौचालय बनाए गए, गरीबों के लिए लगभग डेढ़ करोड़ से अधिक घर बनाए गए, लगभग ढाई करोड़ घरों में बिजली पहुंचाई गई, 13 करोड़ से अधिक लोगों को मुद्रा योजना के माध्यम से स्वरोजगार के लिए आसान शर्तों पर ऋण उपलब्ध कराये गए और लगभग 13 करोड़ गरीब बच्चों एवं प्रसूता माताओं का टीकाकरण किया गया।

उन्होंने कहा कि आयुष्मान भारत योजना के तहत देश के लगभग 50 करोड़ गरीब लोगों को स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं से निजात दिलाते हुए पांच लाख रुपये प्रतिवर्ष तक का स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराया गया है जिससे पांच महीने में ही 15 लाख गरीब लाभान्वित हुए हैं। लेकिन कांग्रेस की बघेल सरकार छत्तीसगढ़ में इस योजना को लागू करने में अड़ंगे लगा रही है। उन्होंने कहा कि पूरा विश्व इस योजना की प्रशंसा कर रहा है क्योंकि इतने बड़े पैमाने पर आज तक दुनिया के किसी भी देश में स्वास्थ्य बीमा की सुविधा नहीं दी गई है। ■

प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन योजना का शुभारंभ

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 मार्च को गुजरात के वस्त्रल में प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन (पीएम-एसवाईएम) योजना का शुभारंभ किया। उन्होंने लाभार्थियों के बीच पीएम-एसवाईएम पेंशन कार्ड का वितरण भी किया। 3 लाख जन सेवा केंद्रों में 2 करोड़ श्रमिकों ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए इस उद्घाटन कार्यक्रम को देखा। इसे ऐतिहासिक दिन बताते हुए प्रधानमंत्री ने पीएम-एसवाईएम योजना को देश के असंगठित क्षेत्र के 42 करोड़ श्रमिकों के प्रति समर्पित किया। उन्होंने कहा कि इस योजना से असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को वृद्धावस्था के दौरान 3 हजार रुपये के मासिक पेंशन का लाभ मिलेगा। आजादी के बाद यह पहला अवसर है, जब इस प्रकार की योजना की शुरुआत हुई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पीएम-एसवाईएम योजना के लाभों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि लाभार्थी द्वारा योगदान में दी गई राशि के बराबर की राशि का योगदान केंद्र सरकार द्वारा किया जाएगा। उन्होंने असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों से अपील करते हुए कहा कि जिन श्रमिकों की मासिक आय 15 हजार रुपये प्रति महीने से कम है, वे निकट के जन सेवा केंद्रों में अपना पंजीकरण करा सकते हैं।

श्री मोदी ने कहा कि पंजीकरण प्रक्रिया बहुत ही आसान है। इसके लिए सिर्फ एक फॉर्म जमा करना होता है और इसमें आधार नंबर तथा बैंक खाते की जानकारी देनी होती है। जन सेवा केंद्र में पंजीकरण करने से संबंधित लागत का वहन केंद्र सरकार करेगी। यह डिजिटल इंडिया का जादू है।

प्रधानमंत्री ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे आसपास काम करने वाले असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को पंजीकरण कराने के लिए सहायता प्रदान करे। उच्च आय वर्ग के लोगों के इस कार्य से गरीबों को बहुत लाभ मिलेगा। श्रमिकों को सम्मान देने से राष्ट्र आगे बढ़ेगा।

श्री मोदी ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई विभिन्न योजनाएं असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को ध्यान में रखकर तैयार की गई हैं। जैसे- आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, पीएम आवास योजना, उज्ज्वला योजना, सौभाग्य योजना और स्वच्छ भारत मिशन आदि। उन्होंने देश में महिलाओं और बालिकाओं के सशक्तीकरण के लिए सरकार द्वारा की गई पहलों के बारे में भी बताया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को वृद्धा अवस्था के दौरान सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए कई योजनाएं लागू कि गई है जैसे- स्वास्थ्य कवरेज के लिए आयुष्मान भारत, जीवन बीमा के लिए प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और शारीरिक अक्षमता के लिए प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि उनकी सरकार बिचौलियों और भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। ■

राष्ट्र को समर्पित हुआ राष्ट्रीय युद्ध स्मारक

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 25 फरवरी को नई दिल्ली में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक राष्ट्र को समर्पित करने हेतु अखंड ज्योति प्रज्जवलित की तथा स्मारक के विभिन्न खंडों को देखा। नई दिल्ली में इंडिया गेट के पास राष्ट्रीय युद्ध स्मारक हमारे जवानों के लिए एक सच्ची श्रद्धांजलि है, जिन्होंने आजादी के बाद देश की रक्षा के लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक उन सैनिकों को भी स्मरण करता है, जिन्होंने शांतिवाहिनी मिशनों और अराजकता विरोधी अभियानों में सर्वोच्च बलिदान दिया था।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री ने 2014 में एक अत्याधुनिक विश्वस्तरीय स्मारक के रूप में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का अपना विज़न प्रस्तुत किया था। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के विन्यास में चार संकेंद्री वृत्त शामिल हैं, जिनके नाम हैं 'अमर चक्र', 'वीरता चक्र', 'त्याग चक्र' और 'रक्षक चक्र'। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक परिसर में एक केंद्रीय चतुष्कोण स्तंभ, एक शाश्वत लौ और भारतीय सेना, वायु सेना और नौसेना द्वारा लड़ी गई प्रसिद्ध लड़ाइयों को दर्शाती छह कांस्य भित्ति चित्र शामिल हैं।

परमवीर चक्र के 21 पुरस्कार विजेताओं की अर्धप्रतिमा परम योद्धा स्टाल पर लगाई गई हैं, जिसमें तीन जीवित पुरस्कार विजेता सूबेदार (मानद कैप्टन) बाना सिंह (सेवानिवृत्त), सूबेदार मेजर योगेंद्र सिंह यादव और सूबेदार संजय कुमार शामिल हैं। राष्ट्रीय युद्ध स्मारक शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि देने के लिए एक कृतज्ञ राष्ट्र की सामूहिक आकांक्षा की परिणति का प्रतिनिधित्व करता है। ■

कैबिनेट ने पीएम-किसान योजना के तहत दूसरी किस्त के लिए आधार संबंधी शर्तों में ढील देने के प्रस्ताव को मंजूरी दी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 28 फरवरी को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) नाम की नई योजना को मंजूरी दी। इसके तहत पूरे देश में 2 हेक्टेयर तक कृषि भूमि वाले छोटे व सीमांत किसान परिवारों को 6,000 रुपये प्रतिवर्ष देने की व्यवस्था है।

इस योजना का शुभारंभ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 24 फरवरी, 2019 को किया था। यह धनराशि 2,000 रुपये की तीन किस्तों में सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के जरिये दी जाएगी। पूरे देश में एक करोड़ किसान परिवारों के लिए पहली किस्त के रूप में 2,000 करोड़ रुपये की धनराशि जारी की गई है। पहली किस्त के शेष लाभार्थियों के लिए धनराशि जल्द ही जारी की जाएगी।

योजना की दूसरी किस्त 01 अप्रैल, 2019 से जारी की जाएगी। 01 फरवरी, 2019 को केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने इस योजना को मंजूरी देते समय दूसरी किस्त के लिए आधार को अनिवार्य बनाया था। हालांकि दूसरी किस्त के लिए शत-प्रतिशत आधार डेटा प्राप्त करना कठिन है, क्योंकि इसके लिए बायोमैट्रिक प्रमाणन की जरूरत है। नामों की वर्तनी में अन्तर से बड़े पैमाने पर लाभार्थियों के नाम रद्द हो जाएंगे। लाभार्थियों के आधार ब्यौरे को प्रमाणित करने के कारण दूसरी किस्त को जारी करने में विलंब होगा।

दूसरी किस्त को जारी करने की तिथि 01 अप्रैल, 2019 है। विलंब से किसानों में असंतोष बढ़ेगा, इसलिए आधार शर्त में ढील दी गई है। यह शर्त तीसरी किस्त जारी करने के लिए मान्य होगी। दूसरी किस्त के लिए केवल आधार संख्या को ही अनिवार्य माना जाएगा। भुगतान से पहले सरकार आंकड़ों को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त कदम उठाएगी। ■

390 कैंसर रोधी गैर-अनुसूचित दवाओं की एमआरपी 87 प्रतिशत तक घटाई गई

रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के अधीनस्थ राष्ट्रीय दवा मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (एनपीपीए) ने 8 मार्च को अधिकतम खुदरा मूल्य (एमआरपी) में 87 प्रतिशत तक की कटौती के साथ 390 कैंसर रोधी गैर-अनुसूचित दवाओं की सूची जारी की। संशोधित कीमतें 8 मार्च, 2019 से ही प्रभावी हो गई।

एनपीपीए ने 27 फरवरी, 2019 को 42 कैंसर रोधी दवाओं को 30 प्रतिशत की व्यापार मार्जिन सीमा में डाल दिया था। निर्माताओं और अस्पतालों को व्यापार मार्जिन (टीएम) फॉर्मूले पर आधारित संशोधित एमआरपी के बारे में सूचित करने का निर्देश दिया गया था, जो 8 मार्च, 2019 से प्रभावी हो गई है। निर्माताओं द्वारा सूचित 426 ब्रांडों में से 91 प्रतिशत अर्थात 390 ब्रांडों की कीमतों में गिरावट का रुख देखा गया।

कैंसर रोगियों के मामले में अपनी जेब से किए जाने वाला खर्च अन्य बीमारियों पर होने वाले व्यय की तुलना में औसतन ढाई गुना अधिक होता है। इस निर्णय से देश भर में 22 लाख कैंसर रोगियों के लाभान्वित होने की आशा है और इससे उपभोक्ताओं को लगभग 800 करोड़ रुपये की वार्षिक बचत होगी। कटौती की सीमा का उल्लेख निम्न है:

सीमा	ब्रांडों की संख्या
75% एवं उससे अधिक	38
50% से लेकर 75% से कम	124
25% से लेकर 50% से कम	121
25% से कम	107
कुल	390

गौरतलब है कि संशोधित एमआरपी के साथ ब्रांडों की पूरी सूची nppaindia.nic.in पर उपलब्ध है। निकट भविष्य में कई और ब्रांडों की कीमतें घटने की आशा है, जैसाकि अन्य निर्माताओं से प्राप्त आंकड़ों से पता चला है। ■

जम्मू और कश्मीर में सरकारी सेवाओं में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए पदोन्नति लाभ

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 28 फरवरी को संविधान (जम्मू और कश्मीर में लागू होने के लिए) संशोधन आदेश, 2019 के माध्यम से संविधान (जम्मू और कश्मीर में लागू होने के लिए) आदेश, 1954 में संशोधन के संबंध में जम्मू और कश्मीर सरकार के प्रस्ताव को अपनी मंजूरी दे दी।

इससे राष्ट्रपति द्वारा अनुच्छेद 370 की धारा (1) के अंतर्गत जारी संविधान (जम्मू और कश्मीर में लागू होने के लिए) संशोधन आदेश, 2019 द्वारा संविधान (77वां संशोधन) अधिनियम, 1955 तथा संविधान (103वां संशोधन) अधिनियम, 2019 से संशोधित भारत के संविधान के प्रासंगिक प्रावधान लागू होंगे।

अधिसूचित होने पर यह आदेश सरकारी सेवाओं में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों को पदोनत्ति लाभ का मार्ग प्रशस्त करेगा और जम्मू और कश्मीर में सरकारी रोजगार में वर्तमान आरक्षण के अतिरिक्त आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए 10 प्रतिशत तक आरक्षण का लाभ प्रदान करेगा।

गौरतलब है कि संविधान (77वां संशोधन) अधिनियम 1955 को भारत के संविधान के अनुच्छेद 16 की धारा 4 के बाद धारा (4ए) जोड़कर लागू किया गया। धारा (4ए) में सेवा में अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों को पदोन्नति लाभ देने का प्रावधान है। संविधान (103वां संशोधन) अधिनियम 2019 देश में जम्मू और कश्मीर को छोड़कर लागू किया गया है और जम्मू और कश्मीर तक अधिनियम के विस्तार से राज्य के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को आरक्षण का लाभ प्राप्त होगा।

मंत्रिमंडल ने जम्मू-कश्मीर आरक्षण (संशोधन) अध्यादेश, 2019 को मंजूरी दी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने जम्मू-कश्मीर सरकार के जम्मू-कश्मीर आरक्षण (संशोधन) अध्यादेश, 2019 को राष्ट्रपति द्वारा जारी करने के प्रस्ताव को अपनी मंजूरी दी। इसमें अंतर्राष्ट्रीय सीमा के आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों को वास्तविक नियंत्रण रेखा (एएलओसी) के आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों की तरह आरक्षण के दायरे में लाने के लिए जम्मू-कश्मीर आरक्षण अधिनियम 2004 में संशोधनों का प्रावधान हैं।

अध्यादेश जारी होने से अंतर्राष्ट्रीय सीमा के आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों को वास्तविक नियंत्रण के आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों की तरह आरक्षण की परिधि में लाने का मार्ग प्रशस्त्र होगा। ■

हमारी सांस्कृतिक एकता

दीनदयाल उपाध्याय

वेदों के रचयिता ऋषियों से लेकर आज तक के समस्त आचार्यों ने राष्ट्र का गुणगान किया। सभी देवताओं और तीर्थों के प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न किया गया। आचार-विचारों की एकता निर्माण करने का प्रयास किया गया। विभेदों को मिटाने के लिए समय-समय पर सुनियोजित प्रयत्न किए गए।

राष्ट्रत्व के विकास में स्वदेश का महत्त्व सबसे अधिक होता है। हम भारतीयों द्वारा आदिकाल से ही अपनी संपूर्ण मातृभूमि के दर्शन का प्रयत्न किया गया। अंतःप्रकृति का बाह्य प्रकृति पर प्रक्षेप करते हुए अपने हृदय की अव्यक्त श्रद्धा को व्यक्त करने के लिए जब वैदिक ऋषि गा उठता है।

इमे मे गंङ्गे यमुने सरस्वति, शुतुद्रि स्तोमं संचता परूष्ण्या।
असिवन्या मरुद्रवृधे वितस्तयार्जीकीये श्रुणुह्या सुषोमया ॥

तब उस राष्ट्र भक्ति की कल्पना को एक स्थूल स्वरूप मिल जाता है; राष्ट्र की आत्मा का आधार स्वरूप मातृभूमि का चित्र आंखों के सम्मुख आ जाता है। परावर्ती सभी आचार्यों ने इसी चित्र को अपनी आंखों के सामने रखा है।

किसी भी मत अथवा संप्रदाय के मानने वाले क्यों न हों, उनके सम्मुख हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक, आसिंधु-सिंधुपर्यंत भारत का चित्र रहता था। प्रत्येक संप्रदाय के आचार्यों ने यही प्रयत्न किया कि उनके संप्रदाय के लोग संपूर्ण भारत को पवित्र मानें। इतना ही नहीं, भारत की इस एकता का प्रत्यक्ष ज्ञान कर सकें, इसके लिए प्रत्येक संप्रदाय में तीर्थ-यात्रा की पद्धति प्रचलित हुई। ये तीर्थ तो संपूर्ण भारत के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक बिखरे हुए हैं। सूर्य के बारह मंदिर, गणपत्यों के अष्ट विनायक, शैवों के बारह ज्योतिर्लिंग, शाक्तों के इक्यावन शक्ति क्षेत्र तथा वैष्णवों के अगणित तीर्थक्षेत्र संपूर्ण भारत में बिखरे पड़े हैं। इन विस्तृत पुण्य-क्षेत्रों के होते हुए प्रांतीयता की संकुचित भावना का प्रवेश असंभव ही था। मर्यादा पुरुषोत्तम राम की दक्षिण-यात्रा ने उत्तर-दक्षिण का जो गठबंधन किया, वह जन-साधारण के आचार-विचार और भावना में अटूट हो गया। महाभारतकार ने इसी एकता को दिखाने के लिए एक बार नहीं तो दो-दो, तीन-तीन बार भारत का एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक अत्यंत भावुकतापूर्ण वर्णन किया है। पुराणकारों ने भारत की भूमि के कण-कण की पवित्रता का गुणगान किया है।

पारस्परिक सहयोग

प्रत्येक मत और संप्रदाय के सम्मुख तो संपूर्ण भारत का चित्र रहा ही तथा उसमें से प्रत्येक वैदिक परंपरा की रक्षा करते हुए मातृभूमि की यशोवृद्धि का प्रयत्न करता भी रहा, किंतु इस प्रकार एक ही ध्येय को लेकर कार्य करने वालों में पारस्परिक सहयोग और एकता की भावना के निर्माण की आवश्यकता का भी समय-समय पर अनुभव किया जाता रहा। भिन्न-भिन्न संप्रदायों और मतों के बीच समन्वय की वृत्ति के विकास का श्रीशंकराचार्य प्रभृति युग-पुरुषों द्वारा जो सद्प्रयास किया जाता रहा, वह भी इसी भावना से अनुप्रेरित था।

इस समन्वयात्मक कार्य में भारत की एकता और अखंडता का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया। इस प्रकार ऊपर-नीचे दाएं-बाएं चारों ही ओर एकता का प्रसार हुआ। ताने-बाने के समान एक भावना-सूत्र को फैलाकर मानो एक वस्त्र का निर्माण किया गया। भिन्न-भिन्न संप्रदायों के तीर्थक्षेत्र संपूर्ण भारत में ताने के समान फैले हुए थे तो उनमें चार प्रमुख तीर्थ-क्षेत्रों को छांटकर उनको सब संप्रदायों के आदर और श्रद्धा का स्थान बना दिया। हिमालय के हिमाच्छादित शिखर पर अवस्थित बद्रीनाथ की यात्रा सब प्रांतों और संप्रदायों के लोगों के जीवन की कामना रही है। महोदधि और रत्नाकर दोनों ही जहां माता के चरण प्रक्षालन करते हैं, वहां श्री रामेश्वरम् के दर्शन करने को जितनी श्रद्धा से शैव जाते हैं, उससे भी अधिक श्रद्धा से वैष्णव गंगोत्तरी का जल लाकर शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। 'जगन्नाथ का भात, पूछो जात न पांत' कहकर जिस प्रेम और श्रद्धा से श्रीजगन्नाथजी का प्रसाद पाते हैं, वह तो राष्ट्रीय संगठन के लिए संजीवनी का काम करता है। बड़े-से-बड़े शाक्त भी द्वारकापुरी में जाकर अपनी श्रद्धा के रक्तकण भगवान् वासुदेव कृष्ण के चरणों में अर्पित कर स्वयं को धन्य समझते हैं। इसी प्रकार पुराणकारों ने जब कहा कि

अयोध्या-मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पूरी द्वारावतीश्चैव सप्तैता मोक्षदायिका॥

तब वे सांप्रदायिक भावना से बहुत ऊंचे उठकर राष्ट्रीय धरातल से विचार कर रहे थे। ये सातों पुरियां मानो भारतीय राष्ट्र के मर्मस्थल हों, उसकी सभ्यता और संस्कृति के केंद्र हों। एक-एक के साथ अतीत की इतनी घटनाओं का संबंध है कि उनकी स्मृति मात्र से अपना संपूर्ण इतिहास चलचित्र की भांति आंखों के सामने से गुजर जाता है। इतना ही नहीं, भारत-भूमि में कहीं भी कोई स्थान मिला, जिसका प्राकृतिक सौंदर्य हमारी हृत्तंत्री के तारों को झंकृत करके हमारे अंतःकरण में कोमल एवं उच्च भावों की सृष्टि करता हो अथवा जिस स्थान का संबंध हमारे पूर्व पुरुषों, हमारे आदर्श एवं आराध्य राम और कृष्ण अथवा किसी भी महापुरुष के साथ हो, जिससे हमारे राष्ट्रीय इतिहास का घटना-चक्र हमारे मनश्चक्षु के सम्मुख खिंच जाए, बस उसी स्थान को तीर्थ का स्वरूप मिल गया। वहां यात्राएं प्रारंभ हो गईं, मेले लगने

लगे और ये मेले और यात्राएं हमारे जीवन का अंग बन गईं। हृदय की जो श्रद्धा आज भी लाखों-करोड़ों लोगों को सब प्रकार का कष्ट झेलकर माघ में ठिठुरते जाड़े में कुंभ के मेले में स्नान करने को प्रेरित करती है, उसका स्रोत बहुत गहरा है। उस महात्मा का राष्ट्र कितना आभारी होगा, जिसने यह श्रद्धा निर्माण करनेवाले संस्कारों की नींव डाली? ये कुंभ के मेले क्या हैं, मानो घूमते-फिरते राष्ट्रीय विद्यालय हों, राष्ट्रीय सम्मेलन हों जो कि भारत के चार प्रमुख स्थानों-हरिद्वार, प्रयाग, उज्जयिनी और नासिक के प्रति तीसरे वर्ष होते रहते हैं। लाखों की संख्या में साधु-संन्यासी वहां आते हैं और करोड़ों की संख्या में जनता एकत्र होकर उनके दर्शन और उपदेशों से अपने हृदय के कल्मष को धोकर जीवन के पावित्र्य का अनुभव करती है। जहां सभी संप्रदायों के लोग इस प्रकार प्रति तीसरे वर्ष एकत्र होते रहते हैं, वहां भारत की समन्वयात्मक जलवायु में एकात्मकता का निर्माण हुए बिना रह ही नहीं सकता।

राष्ट्रीयता–पोषक संस्कार

अपने दिन प्रतिदिन के व्यवहार में भी यह राष्ट्रीयता की भावना पुष्ट होती रही, इसके लिए दैनिक आचरण में भी राष्ट्र-भावना के पोषक संस्कारों का समावेश कर दिया गया था। प्रातः उठते ही, भूमि पर चरण रखते ही, अत्यंत विनीत भाव से हिंदू माता को नमस्कार करता हुआ कहता है

समुद्र बसने देवि, पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपनि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शम् क्षमस्व मे॥

वही संपूर्ण भारत का चित्र और उसके सम्मुख हृदय की संपूर्ण श्रद्धा ही मानो छलकी पड़ती हो। फिर जो प्रातः स्मरण करता हो, वह तो एक के बाद एक अपने पूर्वजों का स्मरण करते हुए उनके समान बनने की अभिलाषा मन में करता है। उस प्रातः स्मरण में प्रांत और संप्रदाय की संकुचित भावना का स्थान नहीं है, वहां तो शत-प्रतिशत विशुद्ध राष्ट्रीयता की ही भावना है। स्नान करते समय अथवा संकल्प के लिए जल लेकर जब हम कहते हैं-

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधि कुरु॥

तब भारत की समग्र पवित्र नदियों का आह्वान कर लेते हैं। इन्हीं नदियों के समान ही सात वन और सात पर्वत, चार सरोवरों को जो कि संपूर्ण भारत में फैले हुए हैं, हमने अपने जीवन के महत्त्व का स्थान दिया है।

समन्वयकारक उपासना

समस्त संप्रदायों के लोगों में एकता स्थापित करने के लिए ही हमारे यहां त्रिमूर्ति की कल्पना की गई, जिसके अनुसार ब्रह्मा, विष्णु और महेश एक ही परब्रह्म के भिन्न स्वरूप हैं। शैव और वैष्णवों में किसी भी प्रकार का विरोध न रहे, इसीलिए तो पुराणकारों ने शिव और विष्णु को एक-दूसरे का भक्त बना दिया। शिव यदि विष्णु की उपासना में लीन तथा विष्णु के चरण कमल से निकली हुई गंगा को धारण किए हुए हैं तो विष्णु के अवतार राम भी बिना शिव की आराधना किए हुए तथा श्रीरामेश्वर के मंदिर की स्थापना किए हुए अपनी विजय-यात्रा में आगे नहीं बढ़ते। अपने वरदान के कारण जब शिवजी भस्मासुर और रावण जैसे राक्षसों से संत्रस्त होते हैं, भगवान् विष्णु ही उनकी सहायता को दौड़ते हैं। गणपति और शक्ति का तो भगवान् शिव से कौटुंबिक संबंध जोड़ दिया है। इस प्रकार सब संप्रदायों के आराध्य देवों को एक-दूसरे से संबंधित करके हमारे पुराणकारों ने पारस्परिक प्रेम और सौजन्यता का बीज बोया है। श्री शंकराचार्य ने तो 'पंचायतन' की पद्धति चलाकर इस संबंध को और भी सुदृढ़ कर दिया। इसके अनुसार प्रत्येक पांचों देवताओं--विष्णु, शिव, शक्ति, गणपति और सूर्य की पूजा करता है। इस समन्वयात्मक प्रवृत्ति और सहिष्णुता की वृत्ति का ही परिणाम है कि भारतीय सदा से प्रेम और सौहार्द से रहते आए हैं।

कर्म, भक्ति और ज्ञान की तीनों धाराओं का भी समन्वय हम पाते हैं। भगवान् कृष्ण ने स्वयं ही गीता में इन तीनों को सुंदर समन्वय कर दिया था और गीता का इस युग में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान हो गया था। स्वयं शंकराचार्य ने अपने जीवन में ज्ञान, कर्म और भक्ति का सुंदर समन्वय किया। उन्हीं के प्रयत्नों के कारण प्रस्थान-त्रयी को मान्यता प्राप्त हो गई। प्रस्थान-त्रयी को महत्त्व देकर जहां एक ओर वेद-विरोधी दुराग्रह से मुक्ति पा ली, वहां वेदों की आत्मा को भी उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीता के ज्ञान द्वारा जीवित रखा।

कर्म–भक्ति–ज्ञान का समन्वय

कर्म, भक्ति और ज्ञान की तीनों धाराओं का भी समन्वय हम पाते हैं। भगवान् कृष्ण ने स्वयं ही गीता में इन तीनों को सुंदर समन्वय कर दिया था और गीता का इस युग में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान हो गया था। स्वयं शंकराचार्य ने अपने जीवन में ज्ञान, कर्म और भक्ति का सुंदर समन्वय किया। उन्हीं के प्रयत्नों के कारण प्रस्थान-त्रयी को मान्यता प्राप्त हो गई। प्रस्थान-त्रयी को महत्त्व देकर जहां एक ओर वेद-विरोधी दुराग्रह से मुक्ति पा ली, वहां वेदों की आत्मा को भी उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीता के ज्ञान द्वारा जीवित रखा।

सम्राटों के सत्प्रयास

भारत की इस अखंडता और एकता को स्थूल स्वरूप देने के लिए एक के बाद एक सम्राट् हुए, जिन्होंने एकच्छत्र चातुरंत साम्राज्य स्थापित किए। सम्राट् चंद्रगुप्त' से लेकर हर्ष और पुलकेशी' तक अनेकानेक सम्राटों ने भारत की इस एकसूत्रता को बनाए रखने का प्रयत्न किया। इतना ही नहीं, भारत के एक-जीवन को मानो संसार के सामने प्रकट करने के लिए जब-जब उत्तर में विदेशियों

का आघात हुआ हो, तब-तब केवल उत्तर ही नहीं, दक्षिण को भी मर्मातक पीड़ा पहुंची। सिर पर चोट लगते ही जैसे संपूर्ण शरीर की शक्तियां प्रतिकार करने को उद्यत हो जाती हैं, उसी प्रकार उत्तर में शक और हूणों के आक्रमणों का प्रतिरोध दक्षिण से आनेवाले शकारि विक्रमादित्य और यशोधर्मन की शक्तियों ने किया। इस प्रकार सुख और दुःख, जय और पराजय, वैभव और पराभव में जो एकता और अभिन्नता प्रकट की गई, उसने हमारे राष्ट्र को एक जीवन के सूत्र में संगठित कर दिया।

साहित्यकारों के प्रयास

हमारे साहित्यकारों ने भी राष्ट्र की इस एकात्मता को ही वाणी का परिधान पहनाकर जन-समाज के सम्मुख उपस्थित किया। रामायण और महाभारत हमारे राष्ट्र के साहित्य की अमूल्य संपत्ति बन गए। भगवान् राम और कृष्ण का चरित्र आदर्श के रूप में राष्ट्र के सामने उपस्थित हुआ। इसके जीवन में हिंदू समाज ने अपनी हृदय की भावनाओं का व्यक्तिकरण पाया। हमारे साहित्यकारों ने भी राष्ट्र की श्रद्धा के इन केंद्रों के प्रति अपनी श्रद्धा के दो फूल चढ़ाकर आत्मसुख का अनुभव किया तथा जनता की इस श्रद्धा को अमन बनाया। साहित्यकारों के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप ही संपूर्ण देश में वेदवाणी संस्कृत, देवी भारती का समान रूप से आदर होने लगा। भारत की प्रांतीय भाषाएं प्राकृत होते हुए भी संस्कृत हमारी राष्ट्र-भाषा बनकर हमारे विचार-विनिमय, भावना-प्रदर्शन, पवित्र संस्कार तथा ज्ञान-विज्ञान के प्रकार का साधन बनी और सबने इसके कलेवर को समान रूप से पुष्ट किया।

नीतिकार और स्मृतिकार

हमारे नीतिकार और स्मृतिकारों ने भी हमारी इस एकता की भावना को बढ़ाने में बड़ी सहायता की। महर्षि चाणक्य ने जहां एक ओर 'पृथिव्यै समुद्रपर्यंताया एकराट्' के प्राचीन आदर्श को सत्य सृष्टि में परिणत करने के लिए सम्राट् चंद्रगुप्त को प्रेरित किया, वहां दूसरी ओर राजनीति और अर्थशास्त्र के गूढ़तम नियमों की रचना करके राष्ट्र की एकसूत्रता बनाए रखने का प्रबंध कर दिया। कौन अपना है और कौन पराया, इसका ठीक-ठाक ज्ञान भी राष्ट्रत्व की भावना के लिए द्योतक होता है और फिर परायों से विजित होकर न रहने की भावना तथा अपने जीवन को बनाए रखने का आग्रह तो इस भावना को और भी पुष्ट करता है। हम अपने नीति-साहित्य में यह भावना सर्वत्र पाते हैं। जब महर्षि चाणक्य ने घोषणा की कि 'नत्वेवार्यस्य दास्य भावः', तब मानो राष्ट्र का स्वाभिमान ही पुकार उठा था। दासत्व की कल्पना के पीछे राष्ट्रत्व के अस्तित्व का भाव तथा दासत्व से घृणा में राष्ट्र का स्वाभिमान अंतर्निहित है। हमारी यह भावना बराबर बनी रही है कि हम स्वयं अपने स्वामी बनें और ईश्वरदत्त देश आर्यावर्त में हम स्वतंत्रतापूर्वक रह सकें। यह एक ऐसी भावना है, जो राजनीतिक है और भौगोलिक भी। इसके अनुसार लोग आरंभ से ही समझते रहे हैं कि आर्यावर्त में हिंदुओं का ही राज्य होना चाहिए। इसका उल्लेख मानव धर्म-शास्त्र (2, 22, 23) तक में है और यह भावना पतंजलि के समय से मेधातिथि' (आक्रम्याक्रम्य न चिरंतत्र म्लेच्छाः स्थातारो भवन्ति) और बीसलदेव तक बराबर लोगों के मन में जीवित रही है। आर्यावर्त यथार्थ पुनरीय कृतवान तत्त्वज्ञों ने अत्यंत पुष्ट किया। मनुस्मृति में तो संपूर्ण भारतवर्ष का वर्णन करके इसको पुण्यभूमि के नाम से अभिहित किया है तथा शेष संपूर्ण को मलेच्छ कहा है। 'भारतं नाम तद्वर्षं भारती यत्र सन्ततिः' जैसे वाक्य भारत देश और उसके जन-समह की आत्मा का ही दिग्दर्शन कराते हैं। इसी संतति का वर्णन करते हुए मनु ने कहा है

एतदेश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन, पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

और इस पुरुस्थान के योग्य चरित्र की महत्ता प्राप्त करने के निमित्त जब अपने नियमों की रचना की तो संपूर्ण देश ने अपने मन में महत्त्वाकांक्षा लेकर उन नियमों का एक सा पालन किया। भारत की संपूर्ण जनता ने अपने आचार-विचारों को स्मृतिकारों के मापदंड से नापा और एकता के ढांचे में ढालनेवाले इन संस्कारों को अपने जीवन में स्थान दिया। परिणामतः संपूर्ण भारत में एक रीति-नीति, एक नियम, उपनियम और एक व्यवहार की सृष्टि हुई। इन्हीं नीतिकारों ने हमारी ग्राम पंचायतों को जन्म दिया, जिनका स्वरूप संपूर्ण भारत में एक सा था, जिन्होंने ऊपर के शासन में परिवर्तन होते हुए भी भारतीय आत्मा की स्वतंत्रता और एकात्मता को बनाए रखा।

इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में राष्ट्र की आत्मा का सर्वांगीण विकास हुआ तथा वह अत्यंत बलवती बनी। भारतवर्ष के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक फैला हुआ संपूर्ण हिंदू समाज, समान विचारधारा एवं समान कर्तव्य से समन्वित होकर, जीवन की एकरसता से परिपूर्ण होकर एक सांस्कृतिक आधार पर अखंड राष्ट्रीयता के पक्के रंग में रंग गया। इन्हीं प्रयत्नों के परिणामस्वरूप देश की जो एक राष्ट्रीयता परिपक्व रूप में प्राप्त हुई, वह पीछे के राजनीतिक पराजय के काल में भी अक्षुण्ण बनी रही। ईसा की आठवीं शताब्दी के प्रारंभ में अरब से जो एक आंधी उठी थी, उसने यूनान, मिस्र, स्पेन और फारस आदि बड़े-बड़े राष्ट्रों को सदा के लिए उड़ा दिया, परंतु भारतवर्ष में आकर वह समुद्र-तट के एक कोने से टकराकर लौट गई। इसके पश्चात् के आक्रमणकारियों को भी सारे समाज ने एकमत से अपना शत्रु माना और उनसे देश को मुक्त करने के प्रयत्न स्थान-स्थान पर चलते रहे। यही नहीं, आज के युग में भी वही संस्कृति हमारे हृदय में जाग रही है। 'हिंदू' शब्द का उच्चारण करने के साथ ही एक हिंदू का दूसरे हिंदू के रक्त के बिंदु-बिंदु से मानो तादात्म्य हो जाता है। इसी अखंड राष्ट्रीयता का आज हमें पुनः आह्वान करना होगा और सिंधु से ब्रह्मपुत्र तक एवं सेतुबंध से हिमाचल के सारे उपांगों तक विस्तृत भारत-भूमि को गौरव तथा स्वाभिमान प्राप्त कराने के लिए अपने त्यागपूर्ण एवं कर्मठ पूर्वजों के प्रयत्नों की परंपरा को अपनाना होगा। ■

(-पाञ्चजन्य, अक्तूबर 31, 1959)

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले...

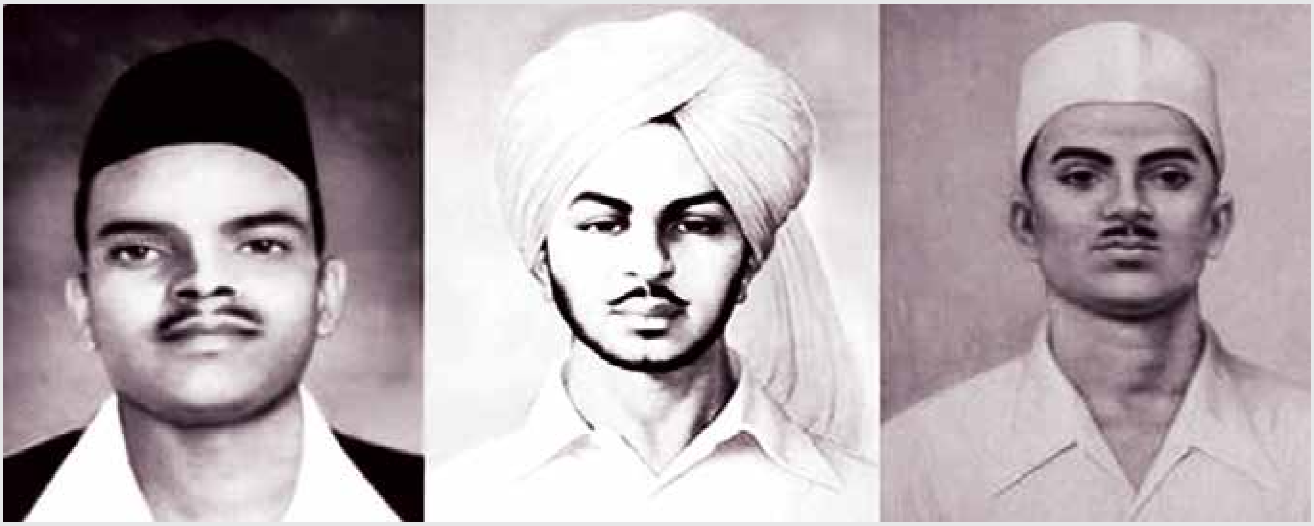

23 मार्च 1931 का दिन महान स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव का अमर बलिदान दिवस है। इन क्रांतिकारियों ने देश की आजादी के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। मातृभूमि के लिए इनका अमर प्रेम और विदेशियों से संघर्ष का अदम्य साहस अतुलनीय है। ये अमर बलिदानी न केवल देश के प्रेरणा पुंज हैं, बल्कि नौजवानों के आदर्श पुरुष भी हैं। समस्त देश इनका कृतज्ञ है।

महान क्रांतिकारी भगत सिंह

(27 सितम्बर, 1907 – 23 मार्च, 1931)

सरदार भगत सिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे। इन्होंने केन्द्रीय असेम्बली की बैठक में बम फेंका और बम फेंककर वे भागे नहीं। क्रांतिकारी भगत सिंह को 23 मार्च 1931 को इनके साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फांसी पर लटका दिया गया। भगत सिंह को जब फांसी दी गई, तब उनकी उम्र मात्र 24 वर्ष की थी। भगत सिंह करीब 12 वर्ष के थे, जब जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जलियांवाला बाग पहुंच गये। इस उम्र में भगत सिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़कर सोचते थे कि इनका रास्ता सही है कि नहीं? बहुत कम उम्र में भगत सिंह जुलूसों में भाग लेना प्रारम्भ किया तथा कई क्रान्तिकारी दलों के सदस्य बने। बाद में वे अपने दल के प्रमुख क्रान्तिकारियों के प्रतिनिधि भी बने। उनके दल के प्रमुख क्रान्तिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद, भगवतीचरण बोहरा, सुखदेव, राजगुरु इत्यादि थे।

जेल के दिनों में उनके द्वारा लिखे पत्रों व लेखों से उनके विचारों का पता लगता है। उनका विश्वास था कि उनकी शहादत भारतीय जनता को और प्रेरित करेगा। इसी कारण उन्होंने सजा सुनाने के बाद भी माफ़ीनामा लिखने से मना कर दिया। उन्होंने अंग्रेजी सरकार को एक पत्र लिखा जिसमें कहा गया था कि उन्हें अंग्रेज़ी सरकार के ख़िलाफ़ भारतीयों के युद्ध का युद्धबंदी समझा जाए तथा फ़ांसी देने के बदले गोली से उड़ा दिया जाए।

फांसी पर जाते समय वे गा रहे थे -

दिल से निकलेगी न मरकर भी वतन की उल्फ़त
मेरी मिट्टी से भी खुस्बू ए वतन आएगी।

सुखदेव थापर

(15 मई 1907 – 23 मार्च 1931)

सुखदेव थापर (या थापड़) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी थे। इन्हें भगत सिंह और राजगुरु के साथ फांसी पर लटका दिया गया था। इन्होंने भगत सिंह, कॉमरेड रामचन्द्र एवं भगवती चरण बोहरा के साथ लाहौर में नौजवान भारत सभा का गठन किया था। सांडर्स हत्या कांड में इन्होंने भगत सिंह तथा राजगुरु का साथ दिया था। जेल में कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार किये जाने के विरोध में व्यापक हड़ताल में भाग लिया था।

शिवराम हरि राजगुरु

(24 अगस्त 1908– 23 मार्च 1931)

शिवराम हरि राजगुरु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी थे। इन्हें भगत सिंह और सुखदेव के साथ फांसी पर लटका दिया गया था। इन्होंने धर्मग्रंथों तथा वेदों का अध्ययन किया तथा सिद्धांत कौमुदी इन्हें कंठस्थ हो गई थी। ये शिवाजी तथा उनकी छापामार शैली के प्रशंसक थे। ये हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी से जुड़े। ■

सात चरण में 11 अप्रैल से 19 मई तक होंगे लोकसभा चुनाव

आंध्र प्रदेश, ओडिशा, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में विधानसभा चुनावों का भी घोषणा

भारत के निर्वाचन आयोग ने 10 मार्च को लोकसभा के लिए 2019 के आम चुनावों और आंध्रप्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम राज्य विधानसभाओं के लिए कार्यक्रम की घोषणा की। 17वीं लोकसभा का चुनाव सात चरण में, 11 अप्रैल से 19 मई के बीच होंगे। सातों चरण के मतदान के बाद 23 मई को मतगणना होगी। इसके साथ ही आयोग ने आंध्र प्रदेश, ओडिशा, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में विधानसभा चुनावों की भी घोषणा की। यहां लोकसभा के साथ विधानसभा के लिए भी मतदान कराया जाएगा।

आगामी लोकसभा चुनाव के पहले चरण के लिये 11 अप्रैल को होने वाले मतदान की अधिसूचना 18 मार्च को जारी की जायेगी। उल्लेखनीय है कि 2014 में 16वीं लोकसभा का चुनाव नौ चरण में कराया गया था।

आम चुनाव का कार्यक्रम घोषित होने के साथ ही देश में चुनाव आचार संहिता तत्काल प्रभाव से लागू हो गयी है। दूसरे चरण का मतदान 18 अप्रैल, तीसरे चरण का मतदान 23 अप्रैल, चौथे चरण का मतदान 29 अप्रैल, पांचवें चरण का मतदान छह मई, छठवें चरण का मतदान 12 मई और सातवें चरण का मतदान 19 मई को होगा। 23 मई को चुनाव परिणाम घोषित होगा।

पहले राउंड में 20 राज्यों की 91 सीटों पर मतदान होगा। दूसरे राउंड में 13 राज्यों की 97 सीटों पर मतदान होगा। तीसरे चरण में 14 राज्यों की 115 सीटों पर वोट पड़ेंगे। चौथे दौर में 9 राज्यों की 71 सीटों, 5वें में 7 राज्यों की 51 सीटों, छठे राउंड में 7 राज्यों की 59 सीटों और 7वें एवं आखिरी दौर में 8 राज्यों की 59 सीटों पर मतदान होगा। 12 राज्यों की 34 विधानसभा सीटों के उपचुनाव के लिए भी लोकसभा चुनाव के साथ ही मतदान होगा।

GENERAL ELECTIONS 2019

Phase	Poll Date	Total Constituencies under Polling
1	11 April, 2019	91
2	18 April, 2019	97
3	23 April, 2019	115
4	29 April, 2019	71
5	06 May, 2019	51
6	12 May, 2019	59
7	19 May, 2019	59
Result Date - 23 May, 2019	Total	543

प्रधानमंत्री ने जनता से मांगा आशीर्वाद

लोकसभा चुनाव कार्यक्रम की घोषणा किए जाने पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने आयोग, कर्मचारियों, सुरक्षाबलों, देशवासियों और राजनीतिक दलों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि निराशावाद से बाहर निकलते हुए पिछले पांच वर्षों में 130 करोड़ भारतीयों के आशीर्वाद और सहभागिता से यह प्रदर्शित हुआ है कि पहले जो नामुमकिन था, वह अब मुमकिन हो गया है।

प्रधानमंत्री ने अपने ट्वीट में कहा, "लोकतंत्र का त्योहार चुनाव आ गया है। मैं सभी भारतीयों से आग्रह करता हूं कि लोकसभा चुनाव 2019 में अपनी सक्रिय हिस्सेदारी से इसे समृद्ध बनायें। मैं उम्मीद करता हूं कि इस चुनाव में ऐतिहासिक मतदान होगा। मैं खास तौर पर पहली बार मत देने वाले मतदाताओं से रिकार्ड संख्या में मतदान करने का आग्रह करता हूं।"

उन्होंने चुनाव आयोग समेत सुचारू रूप से चुनाव संपन्न सुनिश्चित कराने के कार्य में पूरे भारत में जमीनी स्तर पर कार्यरत सभी आधिकारियों और सुरक्षाकर्मियों को शुभकामनाएं दीं और कहा कि वर्षों से व्यवस्थित रूप से चुनाव आयोजित करने के लिये भारत को चुनाव आयोग पर गर्व है।

श्री मोदी ने कहा कि साल 2014 में लोगों ने पूरी तरह से संप्रग को खारिज कर दिया था। लोगों में संप्रग के भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और नीतिगत पंगुता को लेकर काफी नाराजगी थी। भारत का आत्मविश्वास काफी नीचे चला गया था और भारत के लोग इस निराशावाद और क्षरण से मुक्ति चाहते थे।

उन्होंने कहा कि 2019 का चुनाव लोगों में विश्वास का भाव और सकारात्मकता का चुनाव है, लोगों की आशा, आकांक्षाओं को पूरा करने का चुनाव है।

उन्होंने कहा कि आज भारत के लोग जानते हैं कि सबसे तेज गति की अर्थव्यवस्था बनना संभव है, आतंक को मुंहतोड़ जवाब देना संभव है, गरीबी को रिकार्ड गति से समाप्त करना संभव है, भारत को स्वच्छ बनाना संभव है, भ्रष्टाचार को मिटाना और भ्रष्ट लोगों को दंडित करना संभव है, समावेशी और सर्वस्पर्शी विकास करना संभव है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सभी राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को 2019 के लोकसभा चुनाव की शुभकामनाएं। हम अलग-अलग राजनीतिक दल के हो सकते हैं, लेकिन हमारा लक्ष्य एक ही है, वह भारत का विकास और प्रत्येक भारतीय का सशक्तीकरण है। ■

अब चुप होकर नहीं बैठेगा नया भारत

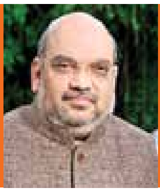

अमित शाह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कुछ वर्ष पहले देश की जनता से वादा किया था- 'मैं देश नहीं झुकने दूंगा, मैं देश नहीं मिटने दूंगा। उन्होंने अपने इस वादे को राजस्थान के चुरू में फिर दोहराते हुए जनता को आश्वस्त किया कि देश सुरक्षित हाथों में है। कुछ समय से देश में यह धारणा विकसित होती गई कि चुनाव में नेता जो वादा करते हैं, बाद में उससे मुकरने लगते हैं। यह धारणा क्यों बनी, उस पर चर्चा जरूरी नहीं, किंतु यह जरूर है कि नरेंद्र मोदी ने इस धारणा को तोड़ा है। पांच साल पहले उन्होंने जनता से जो वादे किए थे, आज उन पर अमल के साथ जनता से संवाद कर रहे हैं। उन्होंने वादा किया था कि देश नहीं झुकने देंगे तो यह साबित करने पर ही वह इसे जनता के बीच दोहरा पा रहे हैं।

सभी जानते हैं कि आतंकवाद आज दुनिया के लिए एक चुनौती है। भारत के सामने भी आतंकवाद को समाप्त करने की चुनौती बनी हुई है। यह लड़ाई दो स्तरों पर लड़नी है। एक, वैश्विक आतंकवाद को समाप्त करना और दूसरे, सीमापार से भारत को नुकसान पहुंचाने वाले आतंक से निपटना। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में दोनों स्तरों पर भारत ने मजबूती के साथ अपनी 'जीरो टोलरेंस' की नीति स्पष्ट की है। मोदी सरकार ने सत्ता संभालते ही इसे स्पष्ट कर दिया था। सीमापार से संचालित आतंकी गतिविधियों के खिलाफ यही हमारी नीति भी है और नीयत भी।

देश में आतंकवाद मुख्य रूप से कश्मीर घाटी तक सीमित रहा है। कश्मीर संकट के लिए भी पिछली सरकारों की तीन भूलें मूल वजह के रूप में सामने आती हैं। पहली भूल 1947 की है, जब सेना आगे बढ़ रही थी तो तत्कालीन सरकार ने उसे रोक दिया था। दूसरी भूल, तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा इसे संयुक्त राष्ट्र में ले जाना थी। तीसरी भूल, कांग्रेस सरकारों के दौरान तुष्टीकरण की राजनीति रही। इन ऐतिहासिक कारणों से कश्मीर की समस्या कायम है और कुछ नकारात्मक ताकतें इनका फायदा उठाकर मुगालते में हैं कि वे आतंक के सहारे कश्मीर को हथिया लेंगी। वे इस गलतफहमी को जितना जल्दी दूर कर लें, बेहतर है। मोदी सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ जो लगातार मजबूत कदम उठाए हैं, उससे स्पष्ट है कि कोई आतंक के बूते कश्मीर का एक इंच हिस्सा इधर से उधर करने की सोच भी नहीं सकता है।

खैर, गत 14 फरवरी को पुलवामा में सीआरपीएफ के जवानों पर आतंकियों ने जो छलपूर्वक हमले का कुकृत्य किया, वह हम सभी के लिए असहनीय था। हमारे 44 जवानों की शहादत से मन उद्वेलित हो गया। शहादत की पीड़ा और गुस्से का भाव देश के आम जनमानस में था। यह जनता का अपनी सेना और चुनी हुई मोदी सरकार पर भरोसा था कि उन्होंने इस कठिन परिस्थिति में भी संयम रखा। यह भी एक बदलाव है कि देश अब कठिन से कठिन परिस्थिति में भी निराश और हताश नहीं होता, बल्कि बेहतरी की आस रखता है। पुलवामा मामले के बाद भी यह दिखा।

पुलवामा हमले के एक दिन बाद ही प्रधानमंत्री मोदी ने देश की जनता को आश्वस्त किया कि इसे अंजाम देने वाले भले ही किसी कोने में छिपे हों, उनका बचना नामुमकिन है। ऐसा कहते हुए उन्हें केवल देश की जनता ही नहीं, बल्कि दुनिया भी देख रही थी। यह बदलते भारत का स्वर था। उनकी कथनी में भारत के मजबूत आत्मविश्वास और निर्णायक रक्षानीति की स्पष्ट ध्वनि थी। इसके दम पर ही हमारी वायुसेना ने पाकिस्तान में घुसकर जैश-ए-मोहम्मद के तीन बड़े आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया। आजादी के बाद भारतीय वायुसेना ने पहली बार दुश्मन देश के घर में घुसकर उसे नेस्तनाबूत किया। पाकिस्तान में भारत के हवाई हमले के बाद हमारे शहीद जवानों के परिवारों को जरूर सुकून मिला होगा। हम अपने वीर जवानों के प्रति संवेदनशील भी हैं और उनकी पीड़ा में सहभागी भी हैं।

26 फरवरी की सुबह दुनिया ने नए भारत की एक नई तस्वीर देखी। एक ऐसा भारत जो शांति का अग्रदूत है, लेकिन अपनी रक्षा के लिए सजग भी है। एक ऐसा भारत जो आतंकवाद के खिलाफ जंग में दुनिया का नेतृत्व करने की क्षमता से संपन्न है तो अपनी सीमा के भीतर होने वाली किसी भी आतंकी गतिविधि का मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम भी। वहीं एक दौर था, जब देश में आतंकी हमले हुआ करते थे। मुंबई, दिल्ली सहित देश के अन्य शहरों में आतंकियों द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर बम धमाके करने की खबरें आती थीं। आतंकवाद रोकने के लिए नीति व निर्णय में

पुलवामा हमले के एक दिन बाद ही प्रधानमंत्री मोदी ने देश की जनता को आश्वस्त किया कि इसे अंजाम देने वाले भले ही किसी कोने में छिपे हों, उनका बचना नामुमकिन है। ऐसा कहते हुए उन्हें केवल देश की जनता ही नहीं, बल्कि दुनिया भी देख रही थी। यह बदलते भारत का स्वर था। उनकी कथनी में भारत के मजबूत आत्मविश्वास और निर्णायक रक्षानीति की स्पष्ट ध्वनि थी।

स्पष्टता नहीं थी। यह दुर्भाग्यपूर्ण था, किंतु मैं यहां उल्लेख करना चाहूंगा कि जब मुंबई में 26/11 का हमला हुआ तब उसका करारा जवाब देने की तैयारी हमारी सेना कर चुकी थी, लेकिन तत्कालीन सरकार की कमजोर राजनीतिक इच्छाशक्ति और आतंकवाद के खिलाफ ढुलमुल रवैये से वह संभव नहीं हो सका। सेना की पूर्ण तैयारी के बावजूद एक महीने तक अनिर्णय से आतंकियों को जवाब नहीं दिया जा सका। अगर तभी ऐसा कर दिया होता तो शायद आतंकियों के हौसले इतने बुलंद नहीं होते।

केंद्र में मोदी सरकार बनने के बाद स्थितियां बदली हैं। आतंकियों के लिए संचालन दूभर हो गया। सीमावर्ती क्षेत्रों को छोड़ दें तो सरकार के पांच वर्षों में कोई आतंकी घटना नहीं हुई। सीमा पर भी हमें छेड़ा गया तो हमने भी छोड़ा नहीं। उरी हमले के बाद हुई सर्जिकल स्ट्राइक को देश भूला नहीं है। तब लंदन में एक कार्यक्रम में पीएम मोदी ने कहा था कि पाक पोषित आतंकवाद का समाधान एक सर्जिकल स्ट्राइक से संभव नहीं। यह लंबी लड़ाई है। आज भारत उस लंबी लड़ाई को लड़ने के लिए तैयार है।

आत्मरक्षा और सीमापार से हो रहे आतंकवाद से निपटने के लिए हम अब किसी महाशक्ति के भी मोहताज नहीं रहे। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नया भारत स्वयं अपनी रक्षा व आतंकवाद से मुक्ति की जंग का नेतृत्वकर्ता बनने की स्थिति में है। यही कारण है कि पुलवामा हमले के बाद दुनिया के तमाम देशों से भारत को समर्थन मिला।

प्रधानमंत्री मोदी आज अगर दुनिया में भारत की ताकत का एहसास करा पा रहे हैं तो इसके पीछे सवा सौ करोड़ देशवासियों की ताकत काम कर रही है। इसीलिए दुनिया के तमाम देश भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को मान रहे हैं। यह भारत की बड़ी कूटनीतिक सफलता है। इसी कूटनीतिक दबाव का असर है कि आज पाकिस्तान की कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही है। भारत ने प्रत्येक मोर्चे पर पाकिस्तान को परास्त किया है। आज वह अलग-थलग पड़ा है।

यह सच है कि आज देश उम्मीदों की उमंग में जी रहा है। पांच साल पहले का निराशा-हताशा वाला दौर अब गया-गुजरा हो गया है। देश को लगा है कि बहुत कुछ बदल गया है और आगे हालात बेहतर होंगे, क्योंकि उसे भरोसा है कि 'मोदी हैं तो मुमकिन है। बीते पांच वर्षों में बहुआयामी विकास के दम पर देश नई ऊंचाई की ओर अग्रसर है। बदलते नए भारत में आतंकवाद जैसी रुकावटें बाधा नहीं बन सकतीं, क्योंकि हमारी नीयत साफ, नीति स्पष्ट और निर्णय में कोई भ्रम नहीं है। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं)
साभार - दैनिक जागरण

भारतीय सेना आज दुनिया की सबसे मजबूत सेनाओं में से एक है: नरेन्द्र मोदी

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक राष्ट्र को समर्पित करने से पहले भूतपूर्व सैनिकों की विशाल रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि यह लाखों सैनिकों के पराक्रम और समर्पण का परिणाम है कि भारतीय सेना को आज दुनिया की सबसे मजबूत सेनाओं में से एक माना जाता है। प्रधानमंत्री ने 25 फरवरी को कहा कि दुश्मनों के खिलाफ और प्राकृतिक आपदाओं से मुकाबला करने के लिए हमारे जांबाज सैनिक अग्रिम रक्षा पंक्ति में रहते हैं।

प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि केन्द्र सरकार ने सैनिकों और पूर्व सैनिकों को 'वन रैंक, वन पेंशन' उपलब्ध कराने का अपना संकल्प पूरा किया है। उन्होंने कहा कि ओआरओपी के परिणास्वरूप पेंशन में 40 प्रतिशत तक का इजाफा हुआ और 2014 की तुलना में सैन्य कर्मियों के वेतन में 55 प्रतिशत तक का इजाफा हुआ है।

श्री मोदी ने कहा कि भारतीय सेना ने संयुक्त राष्ट्र के 70 प्रमुख शांति मिशनों में से लगभग 50 मिशनों में भागीदारी की है। लगभग 2 लाख सैनिक इन कार्रवाइयों का हिस्सा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय नौ सेना द्वारा 2016 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय जहाजी बेड़ा समीक्षा में 50 देशों की नौ सेना ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि हमारे सशस्त्र बल प्रत्येक वर्ष मित्र देशों की सेनाओं के साथ औसत रूप से 10 बड़े संयुक्त अभ्यास कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि हिंद महासागर में पायरेसी में भारी कमी काफी, हद तक भारतीय सैन्य शक्ति और हमारी अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी के कारण आई है। प्रधानमंत्री ने 1.86 लाख बुलेट प्रूफ जैकेट की भारतीय सेना की पुरानी मांग की चर्चा करते हुए कहा कि केंद्र सरकार ने साढ़े चार वर्षों में 2.30 लाख बुलेट प्रूफ जैकेट की खरीदारी की है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार भारतीय सेना को आधुनिक विमान, हेलिकॉप्टरों, सबमेरिन, जहाजों तथा हथियार भंडार से लैस कर रही है। उन्होंने कहा कि काफी समय से लंबित निर्णय राष्ट्रीय हित में लिए जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के अतिरिक्त राष्ट्रीय पुलिस स्मारक की भी स्थापना की गई है। केंद्र सरकार ने सरदार पटेल, बाबा साहब अम्बेडकर तथा नेताजी सुभाष चंद्र बोस सहित महान राष्ट्रीय नेताओं को मान्यता दी है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार राष्ट्रीय हित को सर्वोच्च रखते हुए निर्णय लेना जारी रखेगी। ■

भारत के विपक्ष के पास सीखने के लिए बहुत कुछ है

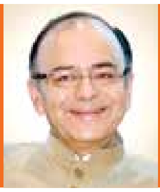

अरुण जेटली

कांग्रेस ने साल 2004 से 2014 तक यूपीए सरकार का नेतृत्व किया और एक भयानक सरकार चलाई। वहीं साल 2014 से 2019 तक विपक्ष में कांग्रेस की भूमिका को इसी श्रेणी में रखना गलत नहीं होगा। इतिहास में ऐसे अवसर भी आए, जहां राष्ट्र एक स्वर में बोलता है। राजनेता और नेता के स्तर तक बढ़ जाते हैं। वे संकीर्ण पक्षपात से ऊपर उठते हैं। 1971 के युद्ध के दौरान श्री अटल बिहारी वाजपेयी और जनसंघ का सरकार को समर्थन, इसी की एक सर्वश्रेष्ठ मिसाल है।

पुलवामा में 14 फरवरी, 2019 को आतंकवादियों ने एक बर्बर हमले को अंजाम दिया, जिसकी योजना सीमा पार बनाई गई थी। कई पाकिस्तानी नागरिक इसमें शामिल थे। कुछ को पहले ही समाप्त किया जा चुका है। इस मामले में भी पर्याप्त सबूत हैं जो इस हमले में पाकिस्तान का हाथ होने का इशारा करते हैं। इन सबूतों को पाकिस्तान के साथ साझा भी किया गया है।

इस हमले से भारत में आतंकवादियों और उसके प्रायोजकों के खिलाफ जनाक्रोश पैदा हुआ। अब भारत की जनता चाहती है कि हमारे शहीद जवानों के हर खून के कतरे का हिसाब हो और उनका यह बलिदान हमें आतंकवाद के खत्में के लिए निरंतर प्रेरित करता रहें।

सीमा पार बालाकोट में हमारी वायु सेना ने भारत की संप्रभुता की रक्षा करने के लिए एक योजनाबद्ध हमला किया। यह हमला आतंकवादी ठिकानों पर था जो एक सफल ऑपरेशन था। किसी भी नागरिक या सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना नहीं बनाया गया - यह प्रहार केवल आतंकवादियों पर था।

पाकिस्तान के एफ-16 द्वारा किया गया जवाबी हमला एक बेहद ही कमजोर ऑपरेशन साबित हुआ। संक्षेप में, हमले और बचाव दोनों ने हमारी वायु सेना के पेशेवर रवैये और वीरता का प्रमाण दिया। पाकिस्तान विश्व स्तर पर अलग-थलग पड़ गया। यहां तक कि आईओसी ने भी इस पर तवज्जो देने से इनकार कर दिया। वहीं, हमारे बहादुर विंग कमांडर अभिनंदन के संबंध में जेनेवा कन्वेंशन के हर सिद्धांत का उल्लंघन किया। इस घटना के बाद न केवल पाकिस्तान को विश्व स्तर पर अलग-थलग कर दिया गया, बल्कि पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद का मुद्दा सुरक्षा परिषद तक पहुंच गया। पाकिस्तान इतना असहाय था कि बालाकोट में हुए हमले को स्वीकार करने की भी स्थिति नहीं थी। यदि उसने हमले और उसके परिणामों को स्वीकार किया होता, तो उसकी जमीन पर चल रहे आतंकवादी शिविरों के सबूत और मृत आतंकवादियों की सूची अंतरराष्ट्रीय मुद्दा होता।

इस हमले पर पूरा भारत एक स्वर में बोल रहा था। जनता ने सरकार के फैसले और वायु सेना की कार्रवाई को भारी समर्थन दिया।

हालांकि, विपक्ष में अपने अन्य साथियों की तरह, कांग्रेस पार्टी इससे कुछ सीखने को तैयार नहीं थी। प्रारंभिक प्रतिक्रिया में वायु सेना की कार्रवाई का समर्थन करने के बाद, कांग्रेस ने इस मुद्दे पर भारत के राजनीतिक राय में एक विभाजन बनाने की कोशिश की। कांग्रेस और उसके राजनैतिक साथियों के हवाले से हमने हाल ही में तीन बयान देखे हैं।

इस मुद्दे पर 21 विपक्षी दलों की बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें प्रधानमंत्री पर पुलवामा और बालाकोट की घटनाओं का राजनीतिकरण करने का आरोप लगाया गया। हालांकि, सरकार ने दो बार

पाकिस्तान के एफ-16 द्वारा किया गया जवाबी हमला एक बेहद ही कमजोर ऑपरेशन साबित हुआ। संक्षेप में, हमले और बचाव दोनों ने हमारी वायु सेना के पेशेवर रवैये और वीरता का प्रमाण दिया। पाकिस्तान विश्व स्तर पर अलग-थलग पड़ गया। यहां तक कि आईओसी ने भी इस पर तवज्जो देने से इनकार कर दिया। वहीं, हमारे बहादुर विंग कमांडर अभिनंदन के संबंध में जेनेवा कन्वेंशन के हर सिद्धांत का उल्लंघन किया। इस घटना के बाद न केवल पाकिस्तान को विश्व स्तर पर अलग-थलग कर दिया गया, बल्कि पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद का मुद्दा सुरक्षा परिषद तक पहुंच गया।

मैं पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के एक संक्षिप्त लेकिन बेहद आपत्तिजनक बयान से बहुत निराश था। पी.वी. नरसिम्हा राव पुरस्कार प्राप्त करते समय उन्होंने कहा कि वह दो देशों द्वारा "आपसी आत्म-विनाश की इस पागल होड़" से परेशान थे। उन्होंने तर्क दिया कि गरीबी, अज्ञानता और बीमारियां दोनों देशों में वास्तविक समस्याएं है और दोनों पक्षों के बीच इस मुद्दे पर विचार करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए। यह कथन क्या दर्शाता है? कथन का मेरा विश्लेषण इस प्रकार है:-

पूर्व प्रधानमंत्री ने भारत के हित के बारे में चिंतित होने के बजाय खुद को एक तटस्थ पक्ष के रूप में प्रस्तुत किया।

विपक्षी दलों के नेताओं के साथ बैठक कर उनको विश्वास में लिया था। वहीं, विपक्षी दल इस मुद्दे के राजनीतिकरण का कोई प्रमाण नहीं दे पाए। यह बयान अनुचित था। लेकिन इस बयान ने दुश्मन को एक संभाल जरूर दिया। पाकिस्तानी मीडिया ने 21 विपक्षी दलों के इस बयान को ट्रम्प कार्ड के रूप में इस्तेमाल किया। इस बयान ने पाकिस्तान के उस दावें को हवा दी, जिसमें वह भारत पर आरोप लगा रहा था कि बालाकोट की कार्रवाई भारत ने अपनी घरेलू राजनीतिक मजबूरी के कारण की थी, न कि आतंकवाद के खिलाफ देश की रक्षा करने के तहत।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री तो एक कदम और आगे बढ़ गई। वह घटना की सत्यता पर संदेह करने लगी और इस हमले की कार्रवाई का विवरण मांगने लगी। सरकार और हमारी वायु सेना दोनों की विश्वसनीयता पर संदेह किया जा रहा है। यहां तक कि कांग्रेस नेताओं ने भी ऐसे ही सवाल उठाए हैं।

मैं पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के एक संक्षिप्त लेकिन बेहद आपत्तिजनक बयान से बहुत निराश था। पी.वी. नरसिम्हा राव पुरस्कार प्राप्त करते समय उन्होंने कहा कि वह दो देशों द्वारा "आपसी आत्म-विनाश की इस पागल होड़" से परेशान थे। उन्होंने तर्क दिया कि गरीबी, अज्ञानता और बीमारियां दोनों देशों में वास्तविक समस्याएं है और दोनों पक्षों के बीच इस मुद्दे पर विचार करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए। यह कथन क्या दर्शाता है? कथन का मेरा विश्लेषण इस प्रकार है:-

पूर्व प्रधानमंत्री ने भारत के हित के बारे में चिंतित होने के बजाय खुद को एक तटस्थ पक्ष के रूप में प्रस्तुत किया।

उन्होंने भारत और पाकिस्तान दोनों के बीच समानता का सिद्धांत विकसित किया। आतंकवाद को बढ़ावा देने वाला और आतंकवाद का शिकार दोनों एक कैसे हो सकते है।

स्पष्ट रूप से, वह उन लोगों से अपनी संप्रभुता की रक्षा करने के लिए भारत के अधिकार पर संदेह करते है जो आतंकवाद के माध्यम से भारत को नुकसान पहुंचाना चाहते हैं।

उस भाषण में आतंकवाद की कोई निंदा नहीं है। उनकी नजर में केवल गरीबी, अज्ञानता और बीमारियां भारत की मौजूदा चुनौतियां है। उनके आकलन में हिंसा और आतंकवाद को कोई तरजीह नहीं मिलती है।

हर दृष्टि से उपरोक्त तीनों कथन सही नहीं है। उन्होंने भारत के राष्ट्रीय हित पर चोट की। न केवल वे पाकिस्तान को मुस्कुराने का अवसर देते हैं, बल्कि भारत को बदनाम करने के लिए पाकिस्तान का एक महत्वपूर्ण साधन बन जाते हैं। क्या विपक्ष चाहता है कि वायु सेना बालकोट हमले के ऑपरेशन विवरण जारी करे? विपक्ष विरोध करने और सवाल पूछने का हकदार है, लेकिन संयम और राजनीतिज्ञता भी सार्वजनिक जीवन का एक अनिवार्य घटक है। मुझे उम्मीद है, भारत का विपक्ष अपनी स्थिति का आंकलन करेगा और अपने गैरजिम्मेदाराना बयानों से देश को निराश नहीं करेगा। ■

(लेखक केंद्रीय मंत्री है)

प्रधानमंत्री ने बक्सर और खुर्जा ताप विद्युत संयंत्रों की आधारशिला रखी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 9 मार्च को ग्रेटर नोएडा से वीडियो लिंक के माध्यम से बक्सर और खुर्जा ताप विद्युत संयंत्रों की आधारशिला रखी। 1320 मेगावाट के ये संयंत्र क्रमशः बक्सर (बिहार) और बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश) में स्थित हैं।

इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि बक्सर और खुर्जा में प्रारंभ होने वाले ये ताप विद्युत संयंत्र भारत के विकास को गति प्रदान करने के अलावा उत्तर प्रदेश, बिहार और अन्य पड़ोसी राज्यों को बिजली उपलब्ध कराएंगे। उन्होंने पिछले साढ़े चार वर्षों में बिजली उत्पादन में हुई जबर्दस्त वृद्धि का भी उल्लेख किया।

भारत में बिजली क्षेत्र में सुधार के लिए सरकार की पहल का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार ने बिजली उत्पादन के चार प्रमुख पहलुओं- उत्पादन, पारेषण, वितरण और कनेक्शन पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने कहा कि इस सकारात्मक दृष्टिकोण ने न सिर्फ बिजली क्षेत्र, बल्कि वन नेशन-वन ग्रिड की अभिकल्पना को यथार्थ में बदल दिया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार ने अक्षय ऊर्जा क्षेत्र को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रोत्साहन दिया है। उन्होंने कहा कि उनका सपना एक विश्व, एक सूर्य, एक ग्रिड है।

केंद्रीय ऊर्जा और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री आर के सिंह ने बिहार के बक्सर के चौसा में शिलान्यास समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा कि इस परियोजना से क्षेत्र को अनेक लाभ प्राप्त होंगे। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र के औद्योगिक विकास को गति प्रदान करेगा और युवाओं के लिए हजारों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न करेगा।

एसजेवीएन के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री नंद लाल शर्मा ने उम्मीद जताई कि यह परियोजना रोजगार सृजन और पूरे क्षेत्र के समग्र विकास को और बढ़ाने की दिशा में कार्य करेगी। इस परियोजना को वर्ष 2023-24 में प्रारम्भ करने की योजना है।

यह परियोजना नवीनतम पर्यावरण मानदंडों का अनुसरण करते हुए विशेष सुविधाओं के साथ बनाई गई है और अत्यंत अत्याधुनिक महत्वपूर्ण एवं जटिल प्रौद्योगिकी पर आधारित है। परियोजना के लिए कोयले की आपूर्ति कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) की सहायक कंपनी सेंट्रल कोल लिमिटेड (सीसीएल) द्वारा की जाएगी, जबकि राज्य ट्रांसमिशन यूटिलिटी, बिहार पहले ही इस परियोजना के लिए अपनी मंजूरी दे चुकी है।

बिहार सरकार के साथ किए गए ऊर्जा क्रय समझौते के संदर्भ में यह परियोजना राज्य को कम से कम 85% बिजली उपलब्ध कराएगी, जो न केवल वर्तमान बिजली परिदृश्य के मामले में बिहार की मांग आपूर्ति घाटे को कम करेगा, बल्कि औद्योगिकीकरण को भी बढ़ावा देगा।

चौसा, बक्सर बिहार में आयोजित इस शिलान्यास समारोह कार्यक्रम में केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे, बिहार के ऊर्जा मंत्री श्री बिजेन्द्र प्रसाद यादव, क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों और वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। ■

सेना को जल्द मिलेगी घातक असॉल्ट राइफल AK-203

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 3 मार्च को उत्तर प्रदेश के अमेठी जिले में स्थित कोरबा ऑर्डिनेंस फैक्टरी में AK सीरीज की सबसे अत्याधुनिक राइफल एके-203 के निर्माण की योजना का उद्घाटन किया। यह एके-47 राइफल का सबसे उन्नत संस्करण है।

एके-203 का मैकेनिज्म एके-47 राइफल की तरह ही है, लेकिन नई राइफल एके-47 की तुलना में ज्यादा सटीक मार करेगी। नई असॉल्ट राइफल में एके-47 की तरह ऑटोमैटिक और सेमी ऑटोमैटिक दोनों सिस्टम होंगे। एक बार ट्रिगर दबाकर रखने से गोलियां चलती रहेंगी।

एके-203 राइफल आयुध निर्माण बोर्ड (ओएफबी) और रूस की कंपनी कंसर्न क्लानिश्नकोव के बीच रक्षा सौदे पर करार हुआ है। भारत और रूस के संयुक्त उपक्रम में लगभग 7.5 लाख राइफलों का निर्माण होगा। यह ब्रह्मोस की तरह का संयुक्त उपक्रम मॉडल है। यहां न सिर्फ राइफलों को बनाया जाएगा, बल्कि भारत से इनका निर्यात भी किया जाएगा।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि अब कोरबा की ऑर्डिनेंस फैक्टरी में दुनिया की सबसे आधुनिक, उन बंदूकों में से एक- AK203 यानी क्लानिश्नकोव राइफलों की सीरिज का सबसे नवीन हथियार, ये हमारे अमेठी में बनाया जाएगा। ये राइफलें रूस और भारत का एक संयुक्त उपक्रम मिलकर बनाएगा।

श्री मोदी ने कहा कि थोड़ी देर पहले हमारे देश की पहली रक्षा मंत्री निर्मला जी ने रूस के राष्ट्रपति जी का संदेश भी यहां पढ़ा है। मैं अपने और भारत के बहुत करीबी दोस्त राष्ट्रपति पुतिन का इस साझेदारी के लिए बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं। ये संयुक्त उपक्रम बहुत कम समय में उनके सहयोग से संभव हुआ है। उनके मित्रतापूर्ण संदेश और शुभकामनाओं के लिए भी मैं राष्ट्रपति पुतिन का बहुत-बहुत आभारी हूं। साथ ही इस संयुक्त उपक्रम से जुड़े रूसी मित्रों को भी मैं धन्यवाद और बधाई और इसकी सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कुछ लोग दुनिया में घूमते-घूमते बताते रहते हैं हर गांव में जाकर- मेड इन उज्जैन, मेड इन जयपुर, मेड इन जैसलमेर, मेड इन बड़ौदा- भाषण करते रहते हैं। उनके भाषण, भाषण ही रह जाते हैं। ये मोदी है, अब मेड इन अमेठी AK203 राइफलों से आतंकियों और नक्सलियों के साथ होने वाली मुठभेड़ों में हमारे सैनिकों को निश्चित रूप से बहुत बढ़त मिलने वाली है।

उन्होंने कहा कि अमेठी की फैक्टरी में अब लाखों की तादाद में ये राइफलें बनाई जाएंगी। आगे जा करके यहां जो राइफल बनेगी, वो दुनिया के दूसरे देशों में भी निर्यात की जाएगी। इसलिए ये फैक्टरी अमेठी के नौजवानों के लिए रोजगार के नए अवसर भी ला रही है और देश के विकास और सुरक्षा के लिए भी एक नया रास्ता खोल रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज से जो काम यहां शुरू हो रहा है, ये काम 8-9 साल पहले शुरू हो जाना चाहिए था। कोरबा की इस फैक्टरी को बनाया ही इसलिए गया था कि यहां आधुनिक राइफल बनाई जाए, लेकिन इसकी पूर्ण क्षमता का कभी इस्तेमाल ही नहीं किया गया है। अमेठी की ये फैक्टरी इस बात की गवाह है कि पहले कैसे हमारी सेना और सुरक्षाबलों की आवश्यकताओं को नजरअंदाज कर दिया गया।

श्री मोदी ने कहा कि देश की सुरक्षा के लिए हमारी सेना ने साल 2005 में आधुनिक हथियार की अपनी जरूरत को तबकी सरकार के सामने रखा था। इसी को देखते हुए अमेठी में उस फैक्टरी के लिए काम शुरू हुआ। आपके यहां के सांसद, जब 2007 में इसका शिलान्यास किया- तब ये कहा गया था कि साल 2010 से इसमें काम शुरू हो जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि काम शुरू होना तो दूर,

शिलान्यास के बाद के तीन साल तक पहले की सरकार ये ही तय नही कर पाई कि यहां की ऑर्डिनेंस फैक्टरी में किस तरह के हथियार बनाए जाएंगे। इतना ही नहीं- ये फैक्टरी बनेंगी कहां, इसके लिए जमीन तक उपलब्ध नहीं कराई गई।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जिस फैक्टरी में साल 2010 में काम शुरू हो जाना चाहिए था, उसकी बिल्डिंग 2013 तक लटकी रही। बिल्डिंग बनने के बाद जैसे-तैसे यहां काम तो शुरू हुआ, क्योंकि सामने चुनाव था, कुछ तो दिखावा करना जरूरी था, लेकिन आधुनिक राइफल तब भी नहीं बनी। श्री मोदी ने कहा कि ये भी मत भूलिए- उन्होंने कहा था कि 1500 नौजवानों को रोजगार देने का वादा किया था। इस अमेठी की बात है, देश की नहीं कर रहा हूं, लेकिन इतनी बड़ी बातें करने वाले लोगों ने अमेठी के लोगों की आंखों में धूल झोंकी और सिर्फ 200 लोगों को काम मिला और आज देशभर में रोजगार के भाषण देते घूम रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि अब आज इतने वर्षों के इंतजार के बाद अमेठी की ऑर्डिनेंस फैक्टरी में दुनिया की सबसे आधुनिक राइफलों में से एक का निर्माण शुरू होने जा रहा है।

उन्होंने कहा कि मैं आपसे जानना चाहता हूं क्या आधुनिक राइफलें न बनाकर हमारे वीर जवानों के साथ अन्याय नहीं हुआ? क्या ऑर्डिनेंस फैक्टरी की पूर्ण क्षमता का इस्तेमाल न करके यहां के संसाधनों के साथ अन्याय नहीं हुआ? क्या रोजगार न देकर अमेठी के नौजवानों के साथ अन्याय नहीं हुआ?

श्री मोदी ने कहा कि पहले जो सरकार थी, उसने सुरक्षाबलों की सुरक्षा को नजरअंदाज करने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी। हमारे वीर जवानों को बुलेटप्रूफ जैकेट के लिए कैसे तरसाया गया। साल 2009 में सेना ने एक लाख 88 हजार बुलेट प्रूफ जैकेट की मांग की थी। बिना बुलेट प्रूफ जैकेट के हमारा जवान दुश्मन की सेना की गोलियों और आतंकियों की छापामार कार्रवाई का सामना कर रहा था। अपनी जान की बाजी लगाकर आतंकियों के साथ खतरनाक एनकाउंटर करता था।

श्री मोदी ने कहा कि 2009 से लेकर 2014 तक, पांच साल कम समय नहीं होता है, लेकिन सेना के लिए बुलेट प्रूफ जैकेट नहीं खरीदी गई। ये हमारी ही सरकार है, जिसने बीते साढ़े चार वर्षों में दो लाख 30 हजार से ज्यादा बुलेट प्रूफ जैकेट खरीदने का ऑर्डर दे दिया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं आज अमेठी में आया हूं तो आप लोगों से जानना चाहता हूं कि देश के वीर जवानों को राइफल का इंतजार कराने वाले, बुलेट प्रूफ जैकेट का इंतजार कराने वाले ये लोग कौन थे? मैं किसी का नाम नहीं लूंगा, लेकिन आप भलीभांति जानते हैं कि कौन लोग थे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे देश को आधुनिक राइफल ही नहीं, आधुनिक बुलेट प्रूफ जैकेट ही नहीं, आधुनिक तोप के लिए भी इन्हीं लोगों ने इंतजार कराया है। ये हमारी ही सरकार है जिसने आधुनिक तोप को सौदा किया और अब तो भारत में ही ये बनाई जा रही है।

श्री मोदी ने कहा कि आधुनिक तोप की ही तरह आधुनिक लड़ाकू विमानों के लिए हमारी वायुसेना दशकों से कह रही थी, लेकिन जिनकी नीयत ही खराब हो, उनको भला वायुसेना की आवाज कहां सुनाई देगी। ये लोग सालों तक राफेल विमानों के सौदे पर बैठे रहे और जब सरकार जाने की बारी आई तो उसको ठंडे बस्ते में फेंक दिया। ये हमारी ही सरकार का प्रयास है कि अगले ही कुछ महीनों में पहला राफेल विमान भारत के आसमान में होगा, लेकिन ये लोग अभी भी ये राफेल विमानों के सौदे को अपने निजी स्वार्थ के लिए, निजी हित के लिए, उसको भी नाकाम कराने के लिए, कुछ न कुछ नए-नए नखरे कर रहे हैं।

पहले जो सरकार थी, उसने सुरक्षाबलों की सुरक्षा को नजरअंदाज करने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी। हमारे वीर जवानों को बुलेटप्रूफ जैकेट के लिए कैसे तरसाया गया। साल 2009 में सेना ने एक लाख 88 हजार बुलेट प्रूफ जैकेट की मांग की थी। बिना बुलेट प्रूफ जैकेट के हमारा जवान दुश्मन की सेना की गोलियों और आतंकियों की छापामार कार्रवाई का सामना कर रहा था। अपनी जान की बाजी लगाकर आतंकियों के साथ खतरनाक एनकाउंटर करता था।

श्री मोदी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट से लेकर सीएजी तक, हर संस्था कह रही है कि भारत सरकार ने सही निर्णय किया है, सही समय पर किया है, सही सौदा किया है और देश के हित में किया है, लेकिन ये लोग झूठ पर झूठ बोले जा रहे हैं। रक्षा सौदे में कमीशन न मिलने की बौखलाहट क्या होती है, ये कुछ लोगों के चेहरों पर साफ देखी जा सकती है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आधे-अधूरे मन से जैसे इन लोगों ने देश की सुरक्षा की परवाह नहीं की, वैसा ही व्यवहार अमेठी के लोगों के साथ भी किया गया है। अमेठी के लिए क्या-क्या कहा गया था, लेकिन आज अमेठी की स्थिति क्या है, ये आपसे बेहतर कौन जानता है।

श्री मोदी ने कहा कि जब नीयत न हो, जब गरीब का भला करने की मंशा न हो, जब लोगों से सिर्फ झूठ ही झूठ बोलना हो तो यही परिणाम आता है। आप याद करिए, यहां पर लगी स्टील फैक्टरी भी सिर्फ इसलिए चली गई, क्योंकि इसके लिए गैस की व्यवस्था नहीं की गई। यहां के मेघापुर फूडपार्क के साथ भी यही किया गया। वहीं, हमने स्टील फैक्टरी के बारे में सोचा तो गैस पाइप लाइन की व्यवस्था की। अब ये स्टील फैक्टरी अमेठी को रोजगार देने के लिए और देश में स्टील उत्पादन को और गति देने के लिए तैयार है। ■

प्रधानमंत्री द्वारा अहमदाबाद में विभिन्न विकास परियोजनाओं का शुभारंभ

अहमदाबाद मेट्रो सेवा के पहले चरण का उद्घाटन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 4 मार्च को अहमदाबाद में कई विकास परियोजनाओं का शुभारंभ किया। अहमदाबाद के वस्त्रल गम मेट्रो स्टेशन में प्रधानमंत्री ने अहमदाबाद मेट्रो सेवा के पहले चरण का उद्घाटन किया। उन्होंने अहमदाबाद मेट्रो के दूसरे चरण का शिलान्यास किया। इस अवसर पर देश में विकसित भुगतान प्रणाली और स्वचालित किराया संग्रह प्रणाली का अनावरण हुआ। यह प्रणाली 'एक राष्ट्र, एक कार्ड' प्रारूप पर आधारित है। इसके बाद प्रधानमंत्री ने मेट्रो ट्रेन को झंडी दिखाई और मेट्रो ट्रेन में यात्रा भी की।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अहमदाबाद में 1200 बिस्तरों वाले नए सिविल अस्पताल, नए कैंसर अस्पताल, दांतों का अस्पताल और नेत्र अस्पताल का उद्घाटन किया। उन्होंने दहोद रेलवे वर्कशॉप और पाटन-बिंदी रेल लाइन का भी अनावरण किया तथा लोथल मेरीटाइम म्यूजियम का शिलान्यास किया।

बीजे मेडिकल कॉलेज ग्राउंड में जन समुदाय को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक दिन है, क्योंकि अहमदाबाद मेट्रो का सपना पूरा हुआ है। उन्होंने कहा कि मेट्रो

अहमदाबाद के लोगों को एक आरामदायक और पर्यावरण अनुकूल यातायात की सुविधा देगा। 2014 से पहले देश में 250 किलोमीटर लाइन पर मेट्रो का परिचालन हो रहा था। आज यह बढ़कर 655 किलोमीटर हो गया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज हुए कॉमन मोबिलिटी कार्ड के अनावरण के पश्चात पूरे देश में यात्रा के विभिन्न प्रकार के कार्डों के उपयोग करने की जरूरत नही रह जाएगी। यह कार्ड यात्रा के लिए 'एक राष्ट्र, एक कार्ड' की उपयोगिता सुनिश्चित करेगा। उन्होंने कहा कि इस कार्ड को स्वदेश में ही विकसित किया गया है। ऐसे कार्डों के निर्माण के लिए विदेश पर निर्भरता खत्म हो गई है। भारत दुनिया के कुछ गिने-चुने देशों में शामिल हो गया है, जहां यात्रा के लिए 'एक राष्ट्र एक कार्ड' की सुविधा है।

जामनगर

गुरू गोबिंद सिंह अस्पताल का नया भवन राष्ट्र को समर्पित

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 4 मार्च को गुजरात के जामनगर में बांद्रा जामनगर हमसफर एक्सप्रेस को झंडी दिखाई। उन्होंने गुरू गोबिंद सिंह अस्पताल के नए 750 बेड एनेक्सी को राष्ट्र को समर्पित किया और विभिन्न एसएयूएनआई परियोजनाओं का अनावरण किया। उन्होंने आजी- 3 से खिजादिया तक 51 किलोमीटर पाइपलाइन सहित जामनगर में अन्य विकास परियोजनाओं को भी आरंभ किया।

एक विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने जल कमी की समस्या से निपटने में पिछले 2 दशको के दौरान गुजरात सरकार के संकल्प और कड़ी मेहनत की चर्चा की। इस संदर्भ में उन्होंने गुजरात में "टैंकर राज" को अनुमति न देने के उनके दृढ़ निश्चय और किस प्रकार सरदार सरोवर बांध ने गुजरात के लोगों को राहत दी है, का उल्लेख किया। उन्होंने नागरिकों से वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लाभ के लिए जल के प्रत्येक बूंद के संरक्षण की अपील की।

गुजरात में स्वास्थ्य क्षेत्र में आई क्रांति का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान गुजरात में स्थापित अस्पतालों से गरीबों को काफी लाभ पहुंचेगा। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा आरंभ आयुष्मान भारत योजना गरीबों के लिए किफायती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित करेगी। ■

प्रयागराज कुंभ मेला 2019

कुंभ स्नान के बाद नरेंद्र मोदी ने सफाईकर्मियों के पैर धोए

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 24 फरवरी को प्रयागराज में पवित्र संगम के जल में डुबकी लगाने के बाद सफाईकर्मियों के पैर धुले। श्री मोदी ने उन सभी लोगों का "कर्म-योगियों" के रूप में उल्लेख किया, जो कुंभ के लिए प्रयागराज में एकत्रित होने वाले भक्तों के लिए सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था सुनिश्चित करने में शामिल रहे हैं। इस संदर्भ में उन्होंने एनडीआरएफ, नाविकों, स्थानीय लोगों और स्वच्छता कर्मियों का भी उल्लेख किया।

यह उल्लेख करते हुए कि पिछले कुछ सप्ताहों में 21 करोड़ से अधिक लोगों ने कुंभ का दौरा किया है, उन्होंने कहा कि स्वच्छता कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शित किया है कि कुछ भी असंभव नहीं है। उन्होंने कहा कि इस साल कुंभ को मिली सराहना के वे सबसे सुपात्र हैं। उन्होंने कहा कि वह क्षण, जब उन्होंने कुछ सफाई कर्मचारियों की चरण वंदना की, उनके स्मरण में हमेशा बने रहेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज घोषित स्वच्छ सेवा सम्मान कोष स्वच्छता कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों की जरूरत के समय मदद करेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि देश इस वर्ष 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती से पहले खुले में शौच मुक्त बनने की ओर बढ़ रहा है।

श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि गंगा नदी की स्वच्छता इस वर्ष भी बहुत चर्चा का विषय रही है। उन्होंने कहा कि आज, उन्होंने इसे पहली बार इसका अनुभव किया है। उन्होंने कहा कि यह नमामि गंगे और केंद्र सरकार के प्रयासों का भी परिणाम है। उन्होंने कहा कि नदी में गिरने वाले नालों को अवरुद्ध किया जा रहा है और सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले उन्हें सियोल शांति पुरस्कार मिला, जिसमें लगभग 1.30 करोड़ रुपये की राशि शामिल थी।

श्री मोदी ने कहा कि उन्होंने उस राशि को नमामि गंगे मिशन के लिए दान कर दिया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के रूप में उन्हें मिले उपहार और स्मृति चिन्ह भी नीलाम कर दिए गए हैं और उनकी आय भी नमामि गंगे मिशन को दे दी गई है। प्रधानमंत्री ने कुंभ से जुड़े नाविकों की भी विशेष रूप से प्रशंसा की। उन्होंने यह भी कहा कि आजादी के बाद पहली बार कुंभ के लिए आने वाले तीर्थयात्रियों को अक्षय वट की यात्रा करने का मौका मिला।

प्रधानमंत्री ने वहां उपस्थित सभी व्यक्तियों को कुंभ के अपने विजन, जो आध्यात्मिकता, विश्वास और आधुनिकता का मिश्रण था, को पूरा करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने इस बारे में उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा निभाई जा रही भूमिका की भी सराहना की। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस वर्ष कुंभ के लिए की गई व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे का विकास शामिल है, जो कि कुंभ मेला समाप्त होने के बाद भी शहर की सेवा करता रहेगा।

प्रधानमंत्री ने 21 लाख रुपये कुंभ मेले के सफाईकर्मियों के कोष में दान दिए

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपनी निजी बचत से 21 लाख रुपये कुंभ मेले से जुड़े सफाईकर्मियों के कल्याण संबंधी कोष में 6 मार्च को दान दिए। प्रधानमंत्री कार्यालय के ट्वीट में कहा गया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने निजी बचत से 21 लाख रुपये की राशि कुंभ मेला के सफाईकर्मियों के कल्याण कोष में दान में दी।

प्रयागराज कुंभ मेला 2019 तीन क्षेत्रों में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल

प्रयागराज कुंभ मेला 2019 को तीन क्षेत्रों में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में रखा गया है। इसमें सबसे बड़ी यातायात और भीड़ प्रबंधन योजना, पेंट माई सिटी योजना के तहत सार्वजनिक स्थलों पर सबसे बड़ी पेंटिंग और सबसे बड़ा स्वच्छता और अपशिष्ट निपटान तंत्र शामिल हैं। इस उद्देश्य से गिनीज वर्ल्ड रिकॉड्र्स की तीन सदस्यों वाली एक टीम ने प्रयागराज का दौरा किया।

28 फरवरी से 3 मार्च तक तीन दिनों तक इस टीम के सदस्यों के सामने बड़े पैमाने पर अभ्यास किया गया था। राजमार्ग पर 28 फरवरी को टीम के लिए लगभग 503 शटल बसों को सेवा में तैनात किया गया था। 1 मार्च को कई लोगों ने चित्रकला अभ्यास में भाग लिया और प्रयागराज कुंभ में सफाई में लगे 10 हजार कार्यकर्ताओं ने एक साथ अपने कर्तव्यों का पालन किया। ■

पिछले साढ़े चार वर्षों में गंगा कार्यों के लिए 27,000 करोड़ रुपयों की मंजूरी

केन्द्रीय जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण, सड़क परिवहन और राजमार्ग तथा नौवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी ने कहा कि पिछले साढ़े चार वर्षों में गंगा कार्यों के लिए 27,000 करोड़ रुपयों की मंजूरी दी जा चुकी है, जबकि पिछले 50 वर्षों में केवल 4,000 करोड़ रुपये दिये गये। अब तक 276 परियोजनाओं को मंजूरी दी जा चुकी हैं, जिनमें से 82 पूरी हो चुकी हैं। श्री गडकरी ने यह बात 27 फरवरी को नई दिल्ली में स्वच्छ गंगा आंदोलन पर आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान कही।

उन्होंने कहा कि गंगा की 40 सहायक नदियों और प्रमुख नालों पर काम शुरू हो चुका है, जो नदी की पूरी सफाई के लिए आवश्यक होगा। श्री गडकरी ने कहा कि 145 में से 70 घाट पूरे हो चुके है और 53 मुक्ति धामों पर कार्य पूरा होने वाला है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली ने कहा कि स्वच्छ गंगा मिशन हमेशा से सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता में रहा है। इसके परिणामस्वरूप सफल कुंभ देखने को मिला, जहां लोगों ने गंगा जल के स्वच्छ प्रवाह के लिए सरकार को बधाई दी। उन्होंने कहा कि गंगा हमारे इतिहास, संस्कृति और सभ्यता का प्रतीक है और यह हजारों मछुआरों, नाविकों और इसके तट पर रहने वाले लोगों की जीवन रेखा है।

पेट्रोलियम मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने आश्वासन दिया कि उनका मंत्रालय गंगा नदी की सफाई में हर संभव सहायता देगा। उन्होंने कहा कि ओएनजीसी उत्तराखंड सरकार की मदद से पहले से ही गंगोत्री में नमामि गंगे परियोजना में शामिल है। उन्होंने इस अवसर पर आईओसीएल की ओर से 34 करोड़ रुपये और खुद की ओर से स्वच्छ गंगा कोष में एक लाख रुपये का योगदान दिया। राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल और डॉ. सत्यपाल सिंह ने भी इस कोष में एक-एक लाख रुपये का योगदान दिया। जल संसाधन सचिव श्री यूपी सिंह ने 25,000 रुपये का योगदान दिया।

स्वच्छ गंगा कोष की स्थापना संस्थानों और व्यक्तियों को जोड़ने और उनके योगदान के लिए जनवरी-2015 में एक न्यास के रूप में की गई थी, जिसके केन्द्रीय वित्त मंत्री पदेन अध्यक्ष है। घरेलू स्तर पर सीजीएफ में योगदान करने वाले को आयकर कानून 1961 की धारा 80जी (1)(i) के अंतर्गत आयकर में शत-प्रतिशत छूट मिलती है। सीजीएफ में योगदान सीएसआर कियाकलापों के दायरे में आते है, जिसे कंपनी कानून, 2013 की अनुसूची-VII में परिभाषित किया गया है।

सीजीएफ को इस महीने की 20 तारीख तक 270.41 करोड़ रुपये का कुल योगदान मिल चुका है। सीजीएफ में योगदान (i) चैक/डीडी के जरिये 'क्लीन गंगा कोष' के नाम से, (ii) एसबीआई की नई दिल्ली स्थित मुख्य शाखा के साथ सीधे इलेक्ट्रॉनिक मोड के जरिये सीजीएफ खाता संख्या 34213740838 (SWIFT Code: SBININBB104) और (iii) सीजीएफ की वेबसाइट में प्रदान किये गये भुगतान मार्ग, जहां यूआरएलः www.cleangangafund.com के जरिये पहुंचा जा सकता है।

अनेक कॉरपोरेट कंपनियां, बैंक और अन्य संस्थान अलग-अलग तरीके से गंगा संरक्षण का समर्थन कर रहे हैं। येस बैंक ने अपनी शाखाओं पर स्वच्छ गंगा का संदेश देते हुए बैनरों पर तथा

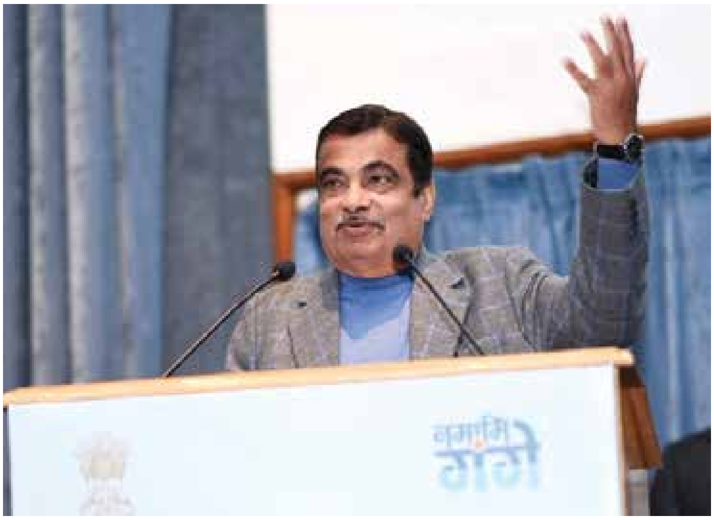

अपने एटीएम पर स्वच्छ गंगा संदेश दिखाने का काम शुरू किया है। एचसीएल फाउंडेशन गौतम बुद्ध नगर और उत्तर प्रदेश के अन्य भाग में वन लगाने के कार्यों में सहायता कर रहा है और साथ ही उसने इन्टैक के साथ मिलकर उत्तराखंड में रूद्राक्ष के पेड़ लगाने की परियोजना को भी समर्थन दिया है।

भारतीय नौवहन निगम ने पश्चिम बंगाल में कटवा घाट में सुविधाएं प्रदान करने के लिए 35 लाख रुपये की एक परियोजना शुरू की है। ब्रिटेन की एक कंपनी-इंडोरामा चेरिटेबल फाउंडेशन ने गंगोत्री और बद्रीनाथ में दो घाटों को विकसित करने की परियोजना हाथ में ली है, जिस पर 25.65 करोड़ रुपये का खर्च आएगा। एनडीटीवी ने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग से उत्तराखंड में गंगा आधारित विषय वस्तुओं पर भित्ति चित्र बनाने की परियोजना शुरू की है। ■

आयुष्मान भारत के अंतर्गत शीघ्र ही 5 करोड़ लाभार्थियों को पंजीकृत किया जाएगा: रविशंकर प्रसाद

सीएससी एसपीवी ने नई दिल्ली में 9 मार्च को 2 करोड़ पीएमजेएवाई और 1000 डिजिटल गांवों के उत्सव के रूप में एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्यगिकी एवं कानून और विधि मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद ने इस आयोजन के लिए सीएससी वीएलई के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि हाल ही में भारत के राष्ट्रपति और माननीय प्रधानमंत्री ने भी सीएससी के प्रयासों की सराहना की है।

श्री रविशंकर प्रसाद ने वीएलई को अगले दो महीनों में आयुष्मान भारत में 5 करोड़ पंजीकरण पूरा करने को कहा। उन्होंने सीएससी के ग्रामीण स्तर के उद्यमियों को अपनी शुभकामनाएं देते हुए आशा जताई कि वे सही मायने में भारत में डिजिटल क्रांति के सूत्रधार होंगे और देश को डिजिटल और वित्तीय रूप से समावेशी समाज बनाने में सक्षम भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि वे सरकारी सेवाओं के वितरण को सक्षम करने में सदैव सीएससी का समर्थन करेंगे।

सीएससी एसपीवी और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने देश भर में सीएससी नेटवर्क के माध्यम से आयुष्मान भारत योजना को लागू करने के लिए भागीदारी की है। सीएससी इस साझेदारी के तहत लाभार्थियों को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय डेटाबेस में योजना के लिए उनका नाम और उनके अधिकार की पहचान करने में मदद करेगा।

सीएससी लाभार्थियों की पहचान के सत्यापन हेतु उनके केवाईसी दस्तावेजों को स्कैन/अपलोड करने में भी मदद के साथ उनके अधिकारों का दावा भी पेश करेगा। लाभार्थियों को सीएससी के माध्यम से अपने आयुष्मान योजना कार्ड को मुद्रित करने की सुविधा भी होगी। सीएससी इस योजना के बारे में नागरिकों के बीच आवश्यक जानकारी प्रदान करेगा, ताकि अधिकतम लाभार्थी इसका लाभ उठा सकें।

अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के हिस्से के रूप में एचडीएफसी ने सीएससी एसपीवी के साथ मिलकर डिजिटल गांवों के रूप में देश भर के गांवों को बदलने और विकसित करने के लिए सहयोग किया है, जो ग्रामीण नागरिकों को जी2सी, शिक्षा, स्वास्थ्य और वित्तीय सेवाओं तक पहुंचने में सक्षम बनाता है।

श्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि पिछले 4 वर्षों में हमारे वीएलई ग्रामीण भारत के परिवर्तन के मुख्य धारक बन गए हैं। मंत्री महोदय ने कहा कि उन्हें गर्व है कि हमारे पास भारत में 67,463 महिला वीएलई हैं। श्री रविशंकर प्रसाद ने 1000 गांवों के डिजिटल रुप से सक्षम होने का भी शुभारंभ किया और डिजिटल ग्राम पहल में समर्थन के लिए एचडीएफसी को बधाई दी।

उन्होंने कहा कि वैश्विक संस्थानों की तरह से ही सीएससी बहुत जल्द ही हार्वर्ड में एक अध्ययन का विषय बन जाएगा। मंत्री महोदय ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री का कहना है कि वे शासन में हर नागरिक की भागीदारी देखना चाहते हैं और वह इसे हमारे देश के गांवों में देख सकते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना एवं प्रौद्यौगिकी मंत्रालय के आदेश के साथ सीएससी एसपीवी देश के ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में डिजिटल ग्रामीण कार्यक्रम (डिजी गांव) लागू कर रहा है, जहां नागरिक, केंद्र और राज्य सरकार एवं निजी हितधारकों की विभिन्न ऑनलाइन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। ये डिजिटल गांव परिवर्तन कारकों के रूप में सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण उद्यमिता और आजीविका को बढ़ावा देते हैं।

इन डिजिटल गांवों के सामुदायिक केंद्रों को सौर ऊर्जा की सुविधा, एलईडी बल्ब निर्माण इकाई, सेनेटरी नैपकिन इकाई और वाई-फाई चौपाल के साथ-साथ अन्य ग्रामीण विकास पहलों से सुसज्जित किया गया है। इन गांवों में सामान्य सेवा केंद्र के रुप में जी2सी और बी2सी, बैंकिंग और बीमा, स्वास्थ्य, शिक्षा और राज्य सरकार की अन्य उपयोगिता सेवाओं के माध्यम से नियमित ऑनलाइन सेवाएं भी उपलब्ध होंगी। ■

वीर सपूतों की शहादत आतंक को समूल नष्ट करने के लिए हमें निरन्तर प्रेरित करेगी: नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 24 फरवरी को अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 53वीं कड़ी के दौरान कहा कि 'मन की बात' शुरू करते हुए आज मन भरा हुआ है। 10 दिन पूर्व भारत-माता ने अपने वीर सपूतों को खो दिया। इन पराक्रमी वीरों ने हम सवा-सौ करोड़ भारतीयों की रक्षा में ख़ुद को खपा दिया। देशवासी चैन की नींद सो सकें, इसलिए इन हमारे वीर सपूतों ने रात-दिन एक करके रखा था।

श्री मोदी ने कहा कि पुलवामा के आतंकी हमले में वीर जवानों की शहादत के बाद देश-भर में लोगों को और लोगों के मन में आघात और आक्रोश है। शहीदों और उनके परिवारों के प्रति चारों तरफ संवेदनाएं उमड़ पड़ी हैं। इस आतंकी हिंसा के विरोध में जो आवेग आपके और मेरे मन में है, वही भाव हर देशवासी के अंतर्मन में है और मानवता में विश्वास करने वाले विश्व के भी मानवतावादी समुदायों में है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत माता की रक्षा में अपने प्राण न्योछावर करने वाले देश के सभी वीर सपूतों को मैं नमन करता हूं। यह शहादत आतंक को समूल नष्ट करने के लिए हमें निरन्तर प्रेरित करेगी, हमारे संकल्प को और मजबूत करेगी। देश के सामने आयी इस चुनौती का सामना हम सबको जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद और बाकी सभी मतभेदों को भुलाकर करना है, ताकि आतंक के खिलाफ़ हमारे कदम पहले से कहीं अधिक दृढ़ हों, सशक्त हों और निर्णायक हों।

श्री मोदी ने कहा कि हमारे सशस्त्र बल हमेशा ही अद्वितीय साहस और पराक्रम का परिचय देते आये हैं। शांति की स्थापना के लिए जहां उन्होंने अद्भुत क्षमता दिखायी है वहीं हमलावरों को भी उन्हीं की भाषा में जबाव देने का काम किया है। आपने देखा होगा कि हमले के 100 घन्टे के भीतर ही किस प्रकार से कदम उठाये गये हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सेना ने आतंकवादियों और उनके मददगारों के समूल नाश का संकल्प ले लिया है। वीर सैनिकों की शहादत के बाद मीडिया के माध्यम से उनके परिजनों की जो प्रेरणादायी बातें सामने आयी हैं उसने पूरे देश के हौंसले को और बल दिया है।

श्री मोदी ने कहा कि आजादी के इतने लम्बे समय तक हम सबको जिस वॉर मेमोरियल का इन्तजार था, वह अब ख़त्म होने जा रहा है। इसके बारे में देशवासियों की जिज्ञासा, उत्सुकता बहुत स्वाभाविक है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि मुझे आश्चर्य भी होता था और पीड़ा भी कि भारत में कोई नेशनल वॉर मेमोरियल नहीं था। एक ऐसा मेमोरियल जहां राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले वीर जवानों की शौर्य-गाथाओं को संजोकर रखा जा सके। मैंने निश्चय किया कि देश में एक ऐसा स्मारक अवश्य होना चाहिये।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि हमने नेशनल वॉर मेमोरियल के निर्माण का निर्णय लिया और मुझे खुशी है कि यह स्मारक इतने कम समय में बनकर तैयार हो चुका है। कल, यानी 25 फरवरी को हम करोड़ों देशवासी इस राष्ट्रीय सैनिक स्मारक को हमारी सेना को सुपुर्द करेंगे। देश अपना कर्ज चुकाने का एक छोटा सा प्रयास करेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि दिल्ली के दिल यानी वो जगह, जहां पर इंडिया गेट और अमर जवान ज्योति मौजूद है बस उसके ठीक नज़दीक में, ये एक नया स्मारक बनाया गया है। मुझे विश्वास है ये देशवासियों के लिए राष्ट्रीय सैनिक स्मारक जाना किसी तीर्थ स्थल जाने के समान होगा। राष्ट्रीय सैनिक स्मारक स्वतंत्रता के बाद सर्वोच्च बलिदान देने वाले जवानों के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता का प्रतीक है। ■

कमल संदेश के आजीवन सदस्य बने

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह

आज ही लीजिए कमल संदेश की सदस्यता और दीजिए राष्ट्रीय विचार के संवर्धन में अपना योगदान!

सदस्यता प्रपत्र

नाम : ....

पूरा पता : ....

....

.... पिन : ....

दूरभाष : .... मोबाइल : (1)................................ (2)................................

ईमेल : ....

सदस्यता						
	एक वर्ष	₹350/-	☐	आजीवन सदस्यता (हिन्दी/अंग्रेजी)	₹3000/-	☐
	तीन वर्ष	₹1000/-	☐	आजीवन सदस्यता (हिन्दी+अंग्रेजी)	₹5000/-	☐

(भुगतान विवरण)

चैक/ड्राफ्ट क्र. :................................ दिनांक :................................ बैंक : ....

नोट : डीडी / चैक '**कमल संदेश**' के नाम देय होगा।
मनी आर्डर और नकद पूरे विवरण के साथ स्वीकार किए जाएंगे।

(हस्ताक्षर)

कमल संदेश

अपना डीडी/चेक निम्न पते पर भेजें

डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003
फोन: 011-23381428 फैक्स: 011-23387887 ईमेल: kamalsandesh@yahoo.co.in

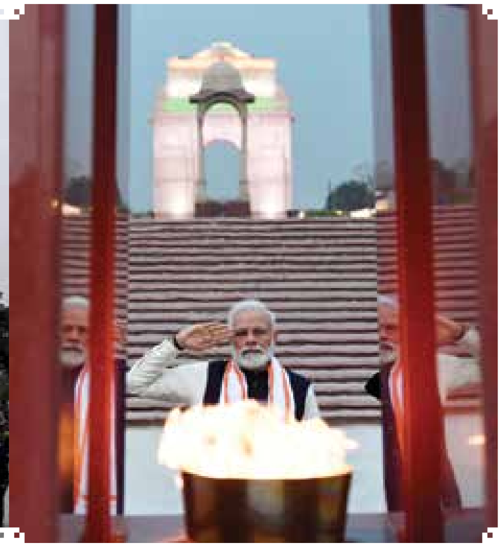

नई दिल्ली में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक को राष्ट्र को समर्पित करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर की आधारशिला रखते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और साथ में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाइक, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, उत्तर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री महेंद्र नाथ पांडेय व अन्य

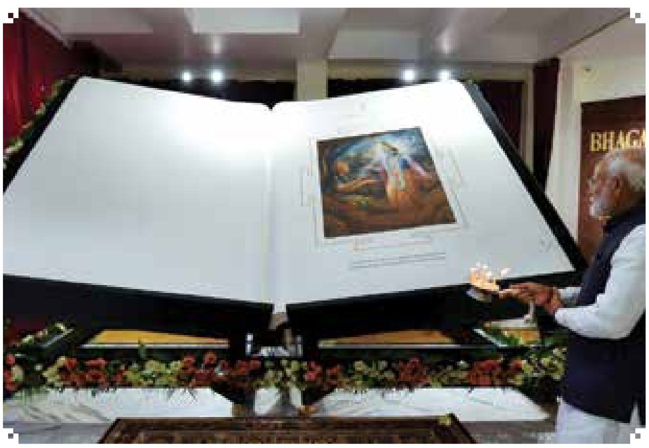

एस्कॉन (नई दिल्ली) में 2.8 मीटर ऊंची और 800 किग्रा से भी अधिक वजनी दुनिया की सबसे बड़ी भगवद गीता का अनावरण करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

अहमदाबाद मेट्रो सेवा के पहले चरण का शुभारंभ करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

प्रेषण तिथि: (i) 1-2 चालू माह (ii) 16-17 चालू माह
डाकघर: लोदी रोड एचओ., नई दिल्ली **"रजिस्टर्ड"**
36 पृष्ठ कवर सहित

आर.एन.आई. DELHIN/2006/16953
डी.एल. (एस)-17/3264/2018-20
Licence to Post without Prepayment
Licence No. U(S)-41/2018-19